

# कृषक



# दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

● भोपाल मंगलवार 17 से 23 जून 2025 ● वर्ष-26 ● अंक-04 ● पृष्ठ-20 ● मूल्य-20 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

## बीज विशेषांक-2025



धान



मक्का



बाजरा



ज्वार



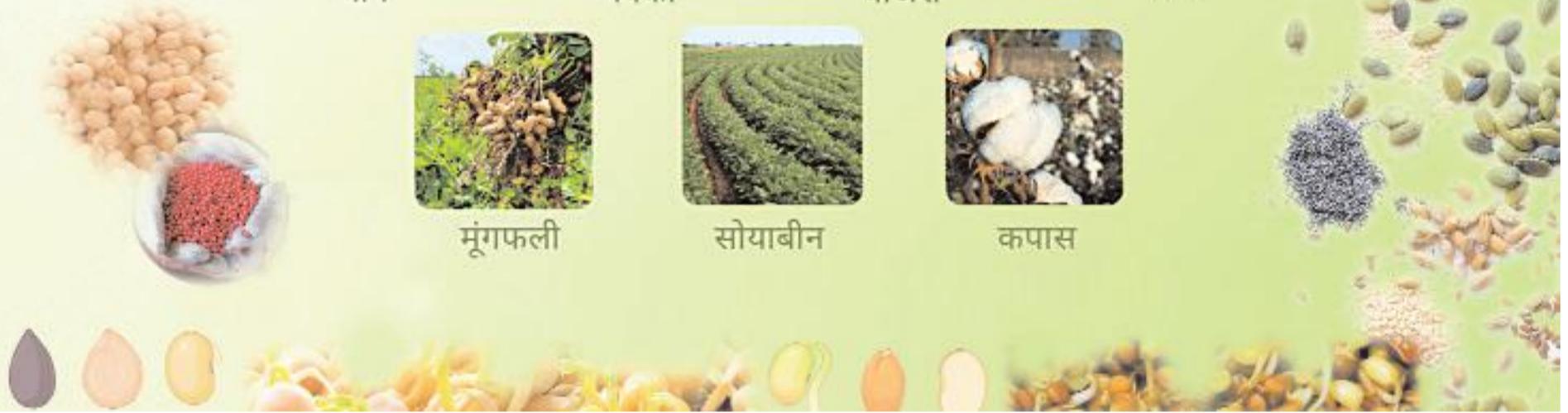
मूंगफली



सोयाबीन



कपास



**इफको का है वादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा**

**फसलों की भरपूर पैदावार के लिए इफको के उत्पादों की उत्कृष्ट श्रृंखला**

**आत्मनिर्भर भारत आत्मनिर्भर कृषि**

**इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड** राज्य कार्यालय- ब्लॉक 2, तृतीय ताल, पर्यावास भवन अररा हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

ऑफिस-सामनरी रोड | [www.nanourea.in](http://www.nanourea.in) | [www.nanodap.in](http://www.nanodap.in) | 1800 183 1987 | [iffco.coop](https://www.facebook.com/iffco.coop) | [iffco.coop](https://www.instagram.com/iffco.coop) | [iffco PR](https://www.youtube.com/iffco) | [iffco](https://www.twitter.com/iffco)

**RMPCL**

**ZIRON**

**नया तरीका, नई उमंग, मेरी फ़सले बढ़ेगी ZIRON के संग**

फसल के हर पड़ाव पर **मैग्नीशियम, जिंक, बोरॉन** से खरीफ में दिखेगा असली फर्क।

**यही है किसान के उन्नति का सही फॉर्मूला**

[www.rmphosphates.com](http://www.rmphosphates.com) | Toll free: 8956926412

उम्मीद से  
ज्यादा का वादा



**60.5 HP** **DI 6565 AV**  
**TREM-IV ENGINE**

**4**  
सिलिंडर का  
4088 CC  
दमदार इंजन

### विशेषताएं

- पावर स्टीयरिंग
- कांस्टेंट मेश गियर
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- लिफ्ट 2000 kg
- तेल में डूबे ब्रेक
- आगे के टायर 7.5x16
- पीछे के टायर 16.9x28



**दमदार ट्रैक्टर**  
**शानदार परफॉर्मेंस**

**DI 350 NG | 40 HP**

### विशेषताएं

- मैकेनिकल स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- व्हील बेस 1960 MM
- सिंगल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm



**हर कदम हर डगर**

**ACE TRACTORS**

**हर किसान का हमसफर**



**ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध**



अग्रणी बैंकों एवं प्राइवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

**रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883**

**ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.**

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India

Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

## देश के उत्तरी हिस्से में 25 जून तक पहुंचने की उम्मीद

दस दिनों से अटका मानसून फिर हुआ सक्रिय

नई दिल्ली। मौसम विभाग ने बताया है कि 26 मई से रुका हुआ मानसून 18 जून से मध्य और पूर्वी भारत में पहुंचने के साथ मजबूत वापसी कर सकता है। इसके एक हफ्ते बाद 25 जून उत्तर-पश्चिमी भारत के अधिकतर हिस्सों में पहुंचने की संभावना है। मौसम विभाग ने बताया कि अगले दो दिनों में उत्तर भारत के अधिकांश हिस्सों में गर्मी कम हो जाएगी और तापमान में 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आएगी। मौसम विभाग ने कहा है कि कुल मिलाकर 19 जून को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान दक्षिण प्रायद्वीप को छोड़कर देश के अधिकांश हिस्सों में सामान्य से अधिक बारिश होने की संभावना है। दक्षिण प्रायद्वीप में सामान्य से कम वर्षा हो सकती है। मानसून के जल्दी आने के बाद दक्षिण-पश्चिम मानसून में रुकावट से इसकी कमी करीब 34 फीसदी तक बढ़ गई जो, 9 जून तक करीब 25 फीसदी थी।



वहीं लू के बारे में मौसम विभाग ने कहा है कि उत्तर भारत में चल रही भीषण लू की स्थिति इसके बाद कम हो जाएगी। मौसम विभाग ने कहा, 'उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत में अगले दो-तीन दिनों में अधिकतम तापमान में कोई बड़ा बदलाव नहीं होने जा रहा है और उसके बाद इसमें धीरे-धीरे 2 से 4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आएगी। वहीं, पूर्वी भारत में भी अगले 24 घंटों के दौरान अधिकतम तापमान में कोई बदलाव नहीं होने की संभावना है और उसके बाद अगले चार दिनों तक इसमें 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की कमी आने लगेगी।'

मौसम विभाग ने 19 जून से शुरू होने वाले सप्ताह के बारे में कहा कि एक हफ्ता पहले के मुकाबले उत्तर

पश्चिम भारत में अधिकतम तापमान में गिरावट की उम्मीद है। विभाग ने कहा, 'उत्तर पश्चिम भारत (पश्चिमी हिमालय क्षेत्र और राजस्थान) के कुछ हिस्सों को छोड़कर देश के अधिकतर हिस्सों में इसके सामान्य से कम रहने के आसार हैं, जहां यह सामान्य के करीब रह सकता है।'

देश भर में जून से सितंबर के मौसम के बारे में मौसम विभाग ने इस साल के लिए अपने मानसून पूर्वानुमान को बदलकर दीर्घाविधि औसत (एलपीए) के 106 फीसदी तक कर दिया है, जबकि अप्रैल में यह 105 फीसदी था। मौसम विभाग ने कहा कि जून में बारिश एलपीए के 108 फीसदी से सामान्य से अधिक रहेगी।

## कम पैदावार वाले क्षेत्र में धान की जगह दलहन-तिलहन की खेती कराएगी सरकार

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने दलहन-तिलहन मिशन को बढ़ावा देने के लिए नया प्लान बनाया है। सरकार अब ऐसे इलाकों में दलहन-तिलहन के साथ-साथ मोटे अनाज की खेती को बढ़ावा देगी जहां धान की पैदावार कम है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने देशभर में 13 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र को चिन्हित किया है, जहां अभी धान की खेती होती है, लेकिन पैदावार राष्ट्रीय औसत से भी कम है। अब यहां के किसानों को धान की बजाय दलहन-तिलहन और मोटे अनाज की खेती करने के लिए प्रोत्साहित दिया जाएगा। इनमें भी सबसे कम पैदावार वाले पांच मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र पर पूरी तरह से दलहन-तिलहन की खेती करवाई जाएगी। आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एमएल जाट ने यह जानकारी दी।



डॉ. जाट ने किसान वैज्ञानिक को भी बढ़ावा देने की बात कही। उन्होंने कहा ये वाकई में तरीफ करने वाली बात है। हमारे देश के कई होनहार किसान खुद से खेती की तरक्की के लिए नई तकनीक, नए बीज तैयार कर रहे हैं। अब समय है कि ऐसे किसान वैज्ञानिकों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिले और उनके शोध को आम किसानों तक पहुंचाया जाए।

डॉ. जाट ने बताया कि अब 24 फील्ड क्रॉप और 15 बागवानी फसलों के बीजों को भी जीनोम तकनीक से संपादित किया जा रहा है। इससे जलवायु अनुकूल बीजों की किस्मों

को तैयार किया जाएगा। जिसका सीधा फायदा किसानों को मिलेगा। वैज्ञानिक ऐसे बीज तैयार कर रहे हैं, जिससे सूखे, बाढ़, कीट व रोगों की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकेगा। मसलन ऐसे बीज तैयार होंगे, जो कम पानी में भी बंपर पैदावार दे सकें। इसी तरह बाढ़ की स्थिति में भी फसल जल्दी खराब न हो सके। जिन फसलों के जिन पर काम चल रहा है, उसमें गेहूं, मक्का, जौ, बाजरा, रागी, दलहन, तिलहन आदि शामिल हैं। इसी तरह बागवानी में आलू, टमाटर, प्याज व अन्य कई सब्जियों के बीजों के जिन को संपादित करके हाई क्वालिटी बीज तैयार किया जा रहा है। डॉ. जाट के अनुसार विकसित कृषि संकल्प अभियान के दौरान कृषि मंत्री से लेकर कृषि वैज्ञानिक तक किसानों से सीधा संवाद कर रहे हैं। किसानों की समस्याओं और सुझाव लेने के बाद नए लक्ष्य तैयार किए जाएंगे। फिर यह कोई लक्ष्य कोई योजना तैयार करने के लिए हो या फिर शोध के लिए। किसानों से मिले इनपुट के आधार पर ही कृषि वैज्ञानिक नए शोध शुरू करेंगे।

## विश्व में मत्स्य उत्पादन के क्षेत्र में भारत दूसरे स्थान पर

इंदौर। केन्द्रीय मछुआ पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री राजीव रंजन सिंह ने कहा है कि दुनिया में मछली उत्पादन में भारत का स्थान दूसरा है। मछली उत्पादन मुनाफे का व्यवसाय है जिसमें मछली उत्पादक अपनी आमदनी को कई गुना बढ़ा सकता है। इसके लिए मत्स्य उत्पादकों को शिक्षण और प्रशिक्षण के साथ तकनीकी जानकारी भी देना होगी। साथ ही उन्हें अच्छा बीज भी उपलब्ध कराना होगा। यदि हमें विटामिन और प्रोटीन उत्पादन के क्षेत्र में आगे बढ़ना है, तो हमें मछली उत्पादन को अधिक बढ़ावा देने की जरूरत है। देश में मछली उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र सरकार की

कई ऐसी योजनाएं हैं, जिसका लाभ उठाकर मछली उत्पादक अपने व्यवसाय को एक नई ऊंचाई दे सकता है। बीते 10 वर्षों में भारत में मछली का उत्पादन 61 लाख टन से बढ़कर 147 लाख टन हुआ है। इसी अवधि में भारत ने मत्स्य उत्पाद का निर्यात 30 हजार करोड़ रुपये से बढ़कर 60 हजार करोड़ रुपये का हो गया है। केन्द्रीय मंत्री श्री रंजन इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में इनलैंड फिशरीज एण्ड एक्वाकल्चर मीट के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

श्री रंजन ने कहा कि असंगठित क्षेत्रों में जो मछली उत्पादक है, उन्हें संगठित क्षेत्रों में लाना है। मत्स्य सहकारी समितियों को और मजबूत करना होगा।

**पाँच तत्वों से परिपूर्ण रामा का सम्पूर्ण**

**परिपूर्ण सम्पूर्ण के साथ अब मैग्नीशियम भी**

**नई पीढ़ी के उर्वरक**

**रामा फॉस्फेट्स लिमिटेड**  
इकाईयाँ : इन्दौर • उदयपुर • पुणे • निवाहेड़ा

20/4, के.एस. स्टोन, इ-दौर-उज्जैन रोड, गांव राजौदा, परमपुरी के पास, लहसील सांवेर, गिला इ-दौर, हेल्पलाइन नंबर: 74608-36083  
E-mail: customercare@ramagroup.co.in

# ग्रीष्मकालीन मूंग एमएसपी पर खरीदेगी सरकार

## मूंग एवं उड़द उपार्जन पंजीयन 19 जून से

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है सरकार ने किसानों के हित में निर्णय लेते हुए ग्रीष्मकालीन मूंग एवं उड़द को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपार्जन किये जाने संबंधी निर्णय लेकर प्रस्ताव केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय को भेजा है।



किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर मूंग एवं उड़द के उपार्जन के लिये किसानों का पंजीयन 19 जून से प्रारंभ होगा।

इस संबंध में संबंधित विभाग एवं एजेंसियों को निर्देश जारी कर दिये गये हैं। डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिये कृषि आधारित उद्योग लगाने में भी मदद कर रही है। किसानों को उनकी फसल का वाजिब दाम दिलाने के लिये प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। डॉ. यादव ने किसान संघों से हुई चर्चा में आश्वस्त किया कि सरकार किसानों को अगली फसल के लिये भी आवश्यक सहायता प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों को उन्नत बीज और उन्नत कृषि यंत्र उपलब्ध कराने के लिये प्रदेश में निरंतर

कृषि मेलों का आयोजन कर रही है। कृषि लागत एवं मूल्य आयोग भारत सरकार द्वारा ग्रीष्मकालीन मूंग का न्यूनतम समर्थन मूल्य 8682 रुपये प्रति क्विंटल और उड़द का न्यूनतम समर्थन मूल्य 7400 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित है। राज्य किसान कल्याण एवं कृषि

विभाग द्वारा केन्द्र को भेजे गये प्रस्ताव में किसानों का पंजीयन, उपार्जित फसल की गुणवत्ता, परिवहन, भुगतान के साथ प्रचार-प्रसार की कार्य-योजना भी प्रेषित की गई है।

प्रदेश के 36 जिलों में मई माह के तृतीय सप्ताह से जून माह के प्रथम सप्ताह तक मूंग फसल कटाई और प्रदेश के 13 जिलों में मई माह के तृतीय सप्ताह से जून माह के प्रथम सप्ताह तक उड़द फसल की कटाई की जाती है। प्रदेश में मूंग का संभावित क्षेत्राच्छादन 14.35 लाख हेक्टेयर, संभावित उत्पादन 20.23 लाख मीट्रिक टन है। इसी प्रकार उड़द का संभावित क्षेत्राच्छादन 0.95 लाख हेक्टेयर, संभावित उत्पादन 1.24 लाख मीट्रिक टन है।

# एक दर्जन कृषि उप संचालक स्थानांतरित

( विशेष प्रतिनिधि )

भोपाल। राज्य शासन ने किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के एक दर्जन उप संचालक कृषि के स्थानांतरण किये हैं। 9 जून 2025 को जारी तबादला आदेश में सीहोर, मंदसौर, भिण्ड, उज्जैन, शाजापुर, बड़वानी, रायसेन, नीमच एवं सतना में नये उप संचालक भेजे गये हैं। तीन उप संचालकों की सेवाएं कृषि संचालनालय, भोपाल को सौंपी गई है। नवीन पदस्थापना सूची निम्नानुसार है।

नाम उप संचालक	वर्तमान पदस्थापना	नवीन पदस्थापना
अशोक कुमार उपाध्याय	गुना	सीहोर
के.के. पाण्डेय	सीहोर	भिण्ड
रविन्द्र मोदी	संचालना. भोपाल	मंदसौर
उमोद सिंह तोमर	शिवपुरी	उज्जैन
आर.पी.एस. नायक	उज्जैन	संचालना. भोपाल
आर.एल. जामरे	बड़वानी	शाजापुर
के.एस. यादव	शाजापुर	संचालना. भोपाल
के.सी. वास्केल	खंडवा	बड़वानी
के.पी. मगत	संचालना. भोपाल	रायसेन
हरीश कुमार मालवीय	राजगढ़	संचालना. भोपाल
प्रकाशचन्द्र पटेल	मुरैना	नीमच
आशीष पाण्डेय	सिंगरौली	सतना

# ऊर्जादाता बनेंगे प्रदेश के किसान: डॉ. यादव

सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना से होगा किसानों का आर्थिक सशक्तिकरण

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश के किसान अब ऊर्जादाता बनेंगे। सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना से प्रदेश के किसानों और छोटे निवेशकों को लाभ होगा। योजना का लाभ लेकर किसान बिजली उत्पादक बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि नेट जीरो का लक्ष्य पाने में मध्यप्रदेश के किसान बड़ी भूमिका निभाएंगे। ऊर्जा समितियों में एक ही मंच पर निवेशक, किसान, विशेषज्ञ और नीति-निर्माताओं ने उपस्थित होकर समृद्धि के नये द्वार पर दस्तक दी है। प्रदेश में अब तक 80 मेगावाट क्षमता की परियोजनाएं स्थापित की जा चुकी हैं, जिससे 16 हजार से अधिक कृषि पम्पों को सौर उर्जा से ऊर्जाकृत किया जा चुका है। मध्यप्रदेश अब देश



की सोलर कैपिटल ऊर्जाधानी बनने के मार्ग पर अग्रसर हैं। अब हमारे अन्नदाता, ऊर्जादाता बनने के पथ पर अग्रसर होंगे।

डॉ. यादव ने बताया कि सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना से छोटे निवेशकों के साथ किसानों को भी लाभ मिलेगा। इस योजना से वोकल फॉर लोकल के अंतर्गत स्थानीय स्तर पर उद्यमियों को निवेश एवं रोजगार के अवसर मिलेंगे। निवेशकों के साथ सरकार 25 साल तक बिजली खरीदने का समझौता करेगी। निवेशकों को नीतिगत प्रोत्साहन के साथ सस्ती जमीन और तय बिजली रेट मिलेगा। उन्होंने बताया कि

सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना से किसानों को भी अत्यधिक फायदा होगा। योजना से किसानों को दिन में भी सस्ती बिजली उपलब्ध कराई जा सकेगी। अन्नदाताओं का आर्थिक सशक्तिकरण होगा। किसानों को रात में बिजली का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। दिन में 8 घंटे तक लगातार बिजली मिलेगी। किसान बिना रुकावट सिंचाई कर सकेंगे। डॉ. यादव ने कहा कि सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना कृषि और व्यवसाय को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी। हमारे किसान इस योजना से आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सशक्त होंगे।

# प्रदेश में बनेंगे कामधेनु निवास

निराश्रित गौवंश की आश्रय समस्या का होगा समाधान

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा निराश्रित गौवंश की आश्रय समस्या के निराकरण के लिए स्थाई समाधान निकाला गया है। अब प्रदेश में कामधेनु निवास स्थापित होगी, जहां बड़ी संख्या में गौवंश की देखभाल की जाएगी। इसके लिए सरकार द्वारा मध्यप्रदेश राज्य में स्वावलंबी गौशालाएं (कामधेनु निवास) स्थापना की नीति 2025 को स्वीकृति भी प्रदान कर दी गई है।

इस नीति के तहत प्रदेश में स्वावलंबी गौशालाएं स्थापित की जाएगी, जिनमें न्यूनतम 5000 गौवंश का पालन अनिवार्य होगा। इनमें से 30 प्रतिशत गौवंश उन्नत दुधारू नस्ल का हो सकता है। सरकार द्वारा अधिकतम 125



एकड़ शासकीय भूमि के उपयोग के अधिकार गौशाला संचालकों को दिए जाएंगे। इन गौशालाओं में 5000 से अधिक गौवंश होने पर प्रति 1000 गौवंश पर 25 एकड़ अतिरिक्त शासकीय भूमि दी जा सकेगी।

पशुपालन एवं डेयरी विभाग लैंड बैंक तैयार करेगा। भूमि पशुपालन एवं डेयरी विभाग के स्वामित्व में रहेगी तथा विभाग की तरफ से मध्यप्रदेश गौ संवर्धन बोर्ड और गोपालक संस्था के मध्य उपयोग अनुबंध निष्पादित किया जाएगा।

कामधेनु निवास की स्थापना के लिए कोई भी पंजीकृत संस्था जैसे कि फर्म, ट्रस्ट, समिति, कंपनी अथवा उनके संघ इस योजना का लाभ ले सकेंगे। संघ अधिकतम पांच संस्थाओं के लिए मान्य होगा, इससे अधिक संख्या वाले संघ को मान्यता नहीं होगी। इन गौशालाओं में गोपालन के साथ ही पंचगव्य निर्माण, बायोगैस, जैविक खाद, नस्ल सुधार, दुग्ध प्रसंस्करण, सौर ऊर्जा, बायोगैस आदि व्यावसायिक गतिविधियों की जा सकेंगी।



डॉ. अजय कौशल  
कुल सचिव  
नियुक्त

भोपाल। राज्य शासन ने किसान कल्याण तथा कृषि विकास संचालनालय, भोपाल में पदस्थ उप संचालक डॉ. अजय कौशल की सेवायें कुल सचिव के पद पर राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर को सौंपी है। डॉ. कौशल इस सप्ताह अपना नवीन पदभार ग्रहण करेंगे।

# डेयरी विकास योजना राज्य स्तरीय समिति गठित

भोपाल। राज्य शासन द्वारा एमपी स्टेट कोऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के बीच में सहकार्यता अनुबंध के उद्देश्यों की पूर्ति और डेयरी विकास योजना के क्रियान्वयन के लिए राज्य स्तरीय स्टीयरिंग कमेटी का गठन किया गया है। समिति के अध्यक्ष मुख्यमंत्री होंगे। समिति के उपाध्यक्ष मंत्री पशुपालन एवं डेयरी विकास और सहकारिता मंत्री होंगे। समिति में सदस्य के रूप में मध्यप्रदेश शासन के मुख्य सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, अपर मुख्य सचिव सहकारिता, अध्यक्ष एनडीडीबी, प्रमुख सचिव वित्त विभाग, प्रमुख सचिव पशुपालन एवं डेयरी विकास विभाग, प्रबंध संचालक एवं कार्यकारी निदेशकगण एनडीडीबी तथा संचालक पशुपालन एवं डेयरी



विभाग को शामिल किया गया है। समिति के सदस्य सचिव प्रबंध संचालक मध्य प्रदेश राज्य को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन होंगे।

उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश के दुग्ध उत्पादकों के हित में एवं सहकारी प्रणाली और सांची ब्रांड का उन्नयन करने के उद्देश्य से पशुपालन एवं डेयरी विकास विभाग द्वारा राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के साथ एमपी स्टेट को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड एवं सम्बद्ध दुग्ध संघ के संचालन एवं प्रबंधन के लिए सहकारिता अनुबंध पर सहमति दिए जाकर अनुबंध निष्पादन किए जाने की स्वीकृति प्रदान की गई। इस संबंध में अप्रैल माह में सहकार्यता अनुबंध निष्पादित किया गया था।

# मक्का की फसल के लिये महावीरा जिरोन पावर प्लस सर्वश्रेष्ठ खाद



श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय  
हेड एग्रोनॉमिस्ट  
आरएमपीसीएल, इंदौर (म.प्र.)

## नया तरीका, नई उमंग मेरी फसल बढ़ेगी Ziron के संग

### मक्का की फसल में महावीरा जिरोन पावर प्लस की उपयोगिता

- चार बोरी यानि दो क्विंटल प्रति एकड़ उपयोग करने से सर्वाधिक उत्पादन।
- फसल के हर पड़ाव पर छः पोषक तत्वों का दिखे असली फर्क।
- 30 से 35 क्विंटल प्रति एकड़ उत्पादन संभव।
- भुट्टों का बड़ा आकार एवं दानों की संख्या में मिले वृद्धि।
- फसल को रखे निरोगी एवं चमकदार बड़े आकार के भुट्टे एवं दाना देने में सक्षम।



### महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध पौषक तत्व

घटक	मात्रा (न्यूनतम प्रति.)
फास्फोरस	16 प्रतिशत
जिंक	0.5 प्रतिशत
बोरोन	0.20 प्रतिशत
सल्फर	11 प्रतिशत
कैल्शियम	19 प्रतिशत
मैग्नीशियम	0.5 प्रतिशत

मध्यप्रदेश में मक्का की फसल का रकबा निरंतर बढ़ रहा है। खरीफ मौसम में 16 से 17 लाख हेक्टेयर में मक्का की फसल बोयी जाती है। गेहूं एवं धान के पश्चात मक्का तीसरी मुख्य फसल है। मक्का की उत्पादन क्षमता गेहूं एवं धान की अपेक्षा 25 से 100 प्रतिशत अधिक है। मक्का के लिये 6.5 से 7.5 पीएच मान वाली उत्तम जल निकास की भूमि उपयुक्त रहती है। 2 से 3 जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करने के पश्चात पाटा चलाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए। खरीफ मौसम में मक्का की बुवाई का सबसे उपयुक्त समय 15 से 30 जून है। मक्का की बुवाई देरी की स्थिति में 10 जुलाई तक की जा सकती है।



मक्का की बुवाई के पहले दो से तीन टन सड़ी गोबर की खाद खेत में अवश्य मिलायें। बुवाई के समय चार बोरी यानि दो क्विंटल महावीरा जिरोन पावर प्लस खाद देने से मक्का का सर्वाधिक गुणवत्तापूर्ण उत्पादन पाया जा सकता है। 40 किलोग्राम पोटाश एवं 160 किलोग्राम यूरिया मक्का के लिये अनुशंसित है। यूरिया की मात्रा बुवाई के दौरान 40 किलोग्राम, 25 से 30 दिन की फसल पर 70 किलोग्राम एवं 45 से 50 दिन की फसल पर 50 किलोग्राम यूरिया का छिड़काव करना चाहिए। मक्का के सर्वश्रेष्ठ उत्पादन के लिये 4 किलोग्राम सिमट्रॉन बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिए। 45 से 50 दिन की फसल पर आधा लीटर एमिट्रॉन-जेड का छिड़काव पानी में मिलाकर करने से चमकदार दाने वाला मक्का लिया जा सकता है। बोरोन 20 प्रतिशत 45 से 50 दिन की खड़ी फसल में अवश्य प्रयोग करें। 25 से 30 दिन की फसल में 250 मिलीलीटर

जिंटाविक फसल में नयी ताजगी एवं उमंग भरने का काम करता है।

महावीरा जिरोन पावर प्लस के साथ मक्का की बुवाई करने पर 30 से 35 क्विंटल प्रति एकड़ मक्का का उत्पादन पाया जा सकता है।

## क्यों जरूरी है मक्का में महावीरा जिरोन पावर प्लस?

महावीरा जिरोन पावर प्लस छः पोषक तत्वों कैल्शियम, सल्फर, फास्फोरस, जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम का अद्भुत मिश्रण है। फसल के हर पड़ाव पर मैग्नीशियम, जिंक और बोरोन से असली फर्क दिखने लगता है। मक्का की फसल में नवीन अंगों के निर्माण, पोटैशियम एवं कैल्शियम अनुपात को नियंत्रित करने में जिंक की प्रमुख भूमिका होती है। महावीरा जिरोन पावर प्लस में उपलब्ध बोरोन मक्का के फूलों एवं भुट्टों को गिरने से बचाता है।

सल्फर मक्का की फसल में कीटनाशक की तरह काम करता है। कैल्शियम जड़ों के विकास एवं पौधे के अंगों की रचना के लिये जरूरी एवं कोशिकाओं का अभिन्न तत्व होने से मक्का के पौधे में मजबूती प्रदान करता है। इसमें उपलब्ध फास्फोरस मक्का की जड़ों की वृद्धि के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है। महावीरा जिरोन पावर प्लस युक्त खाद मुख्य और पौषक तत्वों का उपयुक्त स्रोत है।

महावीरा जिरोन पावर प्लस के साथ मक्का की बुवाई करने से मक्का का अधिकतम उत्पादन, बेहतर गुणवत्ता एवं उत्पादन लागत में बचत होती है। इसके अलावा इसके प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता बरकरार रहती है। पौधों में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। महावीरा जिरोन पावर प्लस सूखा सहनशीलता में वृद्धि करता है तथा उर्वरकों की दक्षता बढ़ाता है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में भी यह उपयोगी है। विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा अनुशंसित महावीरा जिरोन पावर प्लस मक्का के लिये सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। मक्का में महावीरा जिरोन पावर प्लस का प्रयोग करके आवश्यक पौषक तत्वों की आपूर्ति आसानी से की जा सकती है। आर.एम. फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स का महावीरा जिरोन पावर प्लस मध्यप्रदेश स्थित कंपनी के अधिकृत विक्रेताओं के पास उपलब्ध है।

### मक्का की फसल में पौषक तत्वों का प्रबंधन ( अनुशंसित उर्वरक की मात्रा- KG 72:32:24 ) प्रति एकड़

अवधि	Mahaveera Ziron PowerPlud	MOP	UREA	SYMTRON	AMITRON- Z	BORON 20%	Zintawik
	KG	KG	KG	KG	ML	GM	ML
बुवाई के समय	200	40	40	4	0	0	0
25-30 दिन बाद में	0	0	70	0	0	0	250
45-50 दिन बाद में	0	0	50	0	500	250	0
75-80 दिन बाद में	0	0	0	0	0	0	0
<b>कुल मात्रा</b>	<b>200</b>	<b>40</b>	<b>160</b>	<b>4</b>	<b>500</b>	<b>250</b>	<b>250</b>
जल घुलनशील उर्वरक 4-5 ग्राम/लीटर पानी में	25-30 दिन की अवधि में 19:19:19 या बलिको (200 एमएल/एकड़) तथा 45-50 दिन की अवधि में 12:61:00 का एक छिड़काव अवश्य करे						

अधिक जानकारी के लिये कंपनी के कस्टमर केयर नंबर +918956926412 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

## साप्ताहिक सुविचार

एक कष्ट के बाद दूसरे कष्ट आते हैं और समृद्धि के बाद समृद्धि आती है।  
- कादम्बरी

## अच्छे उत्पादन के लिये अच्छा बीज जरूरी

**क** हावत के अनुसार 'जैसा बोओगे वैसा काटोगे, बिल्कुल सही है। बीज एक संस्कार है। मजबूत जीव का प्रमुख आधार है। किसी भी प्राणी, जीव-जन्तु एवं वनस्पति के लिये यह चरितार्थ करती हुई कहावत है। खेती में बीज वह संस्कार है जिस पर सारा उत्पादन निर्भर रहता है। अच्छे बीज से बेहतर उत्पादन की कल्पना की जा सकती है। लेकिन यदि बीज की गुणवत्ता सही नहीं है तो अच्छे उत्पादन के बारे में सोचना दिवा स्वप्न के समान होगा। बीज के मामले में

हर साल किसानों के साथ ठगी होना स्वभाविक है।

जागरुकता के अभाव में किसान धोखाधड़ी के शिकार होते हैं। बीज कंपनियों एवं विक्रेताओं के झांसे में आकर किसान गलती कर जाते हैं जो उन्हें वर्ष भर पछताने के लिये बाध्य करती है। चमचमाती बोरेटियों में महंगा बीज किसानों को थमा दिया जाता है जो पूरी तरह से अमानक निकलता है। कतिपय किसान विरोधी ताकतें इस निंदनीय कृत्य में लिप्त पायी जाती हैं लेकिन बदनामी पूरे बीज उद्योग एवं विक्रेताओं के नाम चढ़ती है। कुल मिलाकर नुकसान किसान का होता है। उत्पादन लागत बढ़ती है, उत्पादन के नाम पर कुछ नहीं मिलता। किसान का दोहरा नुकसान होता है। बीज धोखाधड़ी के मामले में कृषि विभाग की भूमिका भी संदिग्ध रहती है। किसानों को बीज खरीदते समय विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। विश्वसनीय संस्था एवं विक्रेता से ही बीज खरीदना चाहिए। किसान भाई कोई भी बीज बुवाई के पहले उसका अंकुरण परीक्षण अवश्य करें। इससे उसके अंकुरण की गुणवत्ता प्रमाणित हो सकेगी। किसानों के साथ बीज के मामले में धोखाधड़ी करने वाली बीज कंपनियों एवं बीज विक्रेताओं के खिलाफ आपराधिक प्रकरण कायम करना चाहिए। जो कंपनियां एवं विक्रेता बीज व्यवसाय के गोरखधंधे में लिप्त पाये जाएं उनका आजीवन बीज विक्रय लायसेंस समाप्त किया जाना चाहिए। कृषि विभाग के मैदानी कर्मचारियों एवं बीज प्रमाणीकरण के बीज निरीक्षकों के भूमिका संदिग्ध सिद्ध होने पर दण्डात्मक कार्यवाही होनी चाहिए। किसानों के साथ बीज की मामले में धोखाधड़ी सिद्ध होने पर मुआवजा दिलाया जाना चाहिए। किसानों को गुणवत्तायुक्त बीज उपयोग करने के लिये जागरुकता अभियान चलाया जाए। किसानों के साथ बीज के मामले में होने वाली धोखाधड़ी को रोककर किसानों के साथ ही राष्ट्रीय नुकसान को भी बचाया जा सकता है।

• डॉ. गीता सिंह, वैज्ञानिक कृषि विस्तार  
कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डौरी (म.प्र.)  
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

**बी** ज का अंकुरण बुवाई से एक सप्ताह पहले किया जाना चाहिए। इससे यह तय करने में मदद मिलेगी कि बीज परिवर्तन की आवश्यकता है या सही समय पर इसकी मात्रा बढ़ाई जाए। यदि बीज 80 से 90 प्रतिशत तक अंकुरित होते हैं, तो वे अच्छे हैं। यदि बीज का अंकुरण 60 से 70 प्रतिशत तक है, तो बुवाई के समय बीज की मात्रा बढ़ाएं और अंकुरण 50% से कम हो, और फिर बीज बदल दें ताकि आपको फसल में नुकसान का सामना न करना पड़े।

## बीज का अंकुरण परीक्षण क्यों है जरूरी ?

भंडारित बीजों से 100 बीज गिनकर खपरैल, परात या ट्रे में भुरभुरी मिट्टी से भरकर या गीली बोरी या फट्टी में गिने दानों को कतार में बाएं। अंकुरण होने तक आवश्यकतानुसार पानी से गीला करते रहें। स्वस्थ अंकुरित पौधों को गिनकर अंकुरण प्रतिशत ज्ञात करें। उदाहरण के लिए गेहूं या चने के अंकुरण परीक्षण में 100 दानों में से 50 दाने ही स्वस्थ अंकुरित हुए अतः गेहूं या चने के बीज का अंकुरण प्रतिशत 50 हुआ जबकि बोने की सिफारिश 85 है अतः यह बीज बोने के उपयोग में नहीं लेना चाहिए।

### पेपर से बीज अंकुरण परीक्षण प्रक्रिया

- ▶ यह एक प्रभावी और सरल विधि है। इसमें आप चार परत में एक पेपर लेते हैं, फिर इसे 3 या 4 बार मोड़ते हैं, फिर बिना छंटाई किए बीज को कागज पर पंक्तिबद्ध कर रख दें। फिर पेपर के दोनों कोनों को धागे के साथ बंद कर दें। फिर पेपर को पानी में भिगो दें।
- ▶ अतिरिक्त पानी को बाहर निकाल दें।
- ▶ अतिरिक्त पानी को निकालने के बाद पेपर को एक पॉलीथीन बैग में रखें और इसे अंदर घर में लटका कर रखें।
- ▶ 4-5 दिनों के बाद अखबार खोलें, अंकुरों की संख्या की गणना करें और बीज के अंकुरण का प्रतिशत ज्ञात करें।
- ▶ इस विधि का उपयोग धान के लिए नहीं किया जा सकता है।

### फॉर्मूला

अंकुरण प्रतिशत = अंकुरित बीजों की संख्या X100/कुल बोए गए बीज

मान लो आपने कुल 100 बीज बोए थे उसमें से 70 बीज अंकुरित हुए तब उसका अंकुरण प्रतिशत 70 होगा।

अंकुरण प्रतिशत = 70X100/100

यदि आपने कुल 150 बीज बोए हैं जिसमें से 110 बीज ही अंकुरित हुए तब अंकुरण प्रतिशत 73.33 प्रतिशत होगा।

यदि 75 प्रतिशत से कम है तो बीज की मात्रा बढ़ानी होगी कितना अतिरिक्त बीज बोया जाए इस हेतु इस फार्मूले का उपयोग करें।

गेहूं प्रति हेक्टेयर हेतु अनुसंशित बीज की मात्रा 100 किलोग्राम है। यदि अंकुरण प्रतिशत 70 है तब बोए जाने वाले बीज की मात्रा 143 किलोग्राम होगी।

बोए जाने वाले बीज की मात्रा = अनुसंशित बीज की मात्रा X100/अंकुरण प्रतिशत

100X100/70=142.85 अर्थात 143 किलोग्राम बीज/हेक्टेयर बोया जाना चाहिए।



विभिन्न फसलों के बीजों के लिए अंकुरण का प्रतिशत क्या होना चाहिये

फसल का नाम	अंकुरण प्रतिशत
धान	80
अरहर	75
मक्का (संकर)	90
मूंग	75
उड़द	75
मूंगफली	70
कपास	65
बरबटी	75
रामतिल	80
सोयाबीन	70
तिल	80
मसूर	75
चना	85
अलसी	80
गेहूं	85
मटर	75
सरसों एवं राई	85
सूरजमुखी	70

## अनमोल वचन

बुरे व्यक्ति हमें यह सिखाते हैं कि अच्छाई क्यों अच्छी होती है।  
- रवीन्द्रनाथ टैगोर

## पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

आषाढ़ कृष्ण/आषाढ़ शुक्ल पक्ष विक्रम संवत् 2082 ईस्वी सन् 2025

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
17 जून 25	मंगलवार	आषाढ़ कृष्ण-06	पंचक
18 जून 25	बुधवार	आषाढ़ कृष्ण-07	पंचक
19 जून 25	गुरुवार	आषाढ़ कृष्ण-08	पंचक
20 जून 25	शुक्रवार	आषाढ़ कृष्ण-09/10	पंचक 7 बजे रात तक
21 जून 25	शनिवार	आषाढ़ कृष्ण-11	योगिनी एकादशी व्रत
22 जून 25	रविवार	आषाढ़ कृष्ण-12	
23 जून 25	सोमवार	आषाढ़ कृष्ण-13	प्रदोष व्रत
24 जून 25	मंगलवार	आषाढ़ कृष्ण-14	
25 जून 25	बुधवार	आषाढ़ कृष्ण-30	हलहारिणी अमावस्या
26 जून 25	गुरुवार	आषाढ़ शुक्ल-01	गुप्त नवरात्रारंभ
27 जून 25	शुक्रवार	आषाढ़ शुक्ल-02	
28 जून 25	शनिवार	आषाढ़ शुक्ल-03	
29 जून 25	रविवार	आषाढ़ शुक्ल-04	
30 जून 25	सोमवार	आषाढ़ शुक्ल-05	

- डॉ. किंजल्क सी. सिंह
  - डॉ. चंद्रजीत सिंह
  - डॉ. अजय कुमार पांडेय
- कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

**धा**न या चावल जनसंख्या के एक बड़े हिस्से का मुख्य भोजन है। इस फसल को उगाने में लगातार देखरेख और परिश्रम की आवश्यकता होती है। एक अच्छी फसल लेने के लिये बीज से शुरुआत करना ही उचित होता है। धान के अच्छे उत्पादन के लिए कृषक वर्ग रोपा वाला धान लगाना पसंद करता है।

धान का रोपा तैयार करने के लिये रोपणी में किस प्रकार कार्य करना है ताकि समुचित देखरेख में सही प्रबंधन हो। इसके लिये अच्छे बीज का चुनाव, रोपणी में पौधों की देखरेख, रोपे की विधि, पोषक तत्व का उचित प्रबंधन, पानी की उपलब्धता एवं कीट तथा रोगों का प्रबंधन अच्छी तरह करने की आवश्यकता होती है ताकि धान की उपज में बढ़ोतरी हो। उचित एवं सही समय पर और सही विधि से रोपाई करने से धान की फसल से भरपूर पैदावार मिलती है।

#### रोपणी डालने के लिए खेत का चुनाव

धान की रोपणी डालने के लिए ऐसे स्थान का चुनाव करें जो पानी या सिंचाई के स्रोत के पास हो। चिकनी या दोमट मिट्टी जिसमें पानी रोकने की क्षमता अधिक होती है, ऐसे खेत धान की खेती के लिए उपयुक्त होते हैं। लेकिन अगर पर्याप्त सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो धान की खेती हल्की भूमि में भी की जा सकती है।

#### बीज दर (किलो प्रति एकड़)

- श्री पद्धति और संकर किस्मों हेतु 2 किलो प्रति एकड़
  - रोपाई पद्धति हेतु 4.5 किलो प्रति एकड़
  - रोपणी के लिए खेत की तैयारी
- सामान्यतः जितने क्षेत्र में ध्यान लगाना है उस क्षेत्र के 20 प्रतिशत हिस्से में रोपणी हेतु स्थान की आवश्यकता होती है। मई-जून में नर्सरी के लिए चुने हुए खेत में दो से 3 सेंटीमीटर पानी भरकर दो या तीन बार जुताई करें ताकि मिट्टी में उपस्थित खरपतवार नष्ट हो जायें। आखिरी जुताई के बाद पाटा चलाकर जमीन को समतल कर लेना चाहिये। धान की नर्सरी में लगभग 1 क्विंटल पकी हुई गोबर की खाद या केंचुये की खाद मिलायें ताकि रोपे गये पौधे को निकालने में आसानी हो तथा जड़ों का नुकसान न हो। यदि सम्भव हो तो एक पैकेट (200 ग्राम) एजेटोबैक्टर और एक पैकेट पी.एस. बी. (200 ग्राम) पकी हुई गोबर की खाद या केंचुये की खाद में मिलायें।

पौध तैयार करने के लिए सवा मीटर चौड़ी, 8 मीटर लंबी और 15 सेंटीमीटर ऊँची क्यारियाँ बनानी चाहिये। दो पट्टियों के बीच में 30 सेंटीमीटर गहरी नालियाँ बनायें जिससे अधिक वर्षा होने पर पानी खेत में एकत्रित ना हो एवं आवश्यकता पड़ने पर इन नालियों में बैठ कर रोपणी में खरपतवारों की निन्दाई सुगमता से की जा सके। पोषक तत्वों की समुचित आपूर्ति हेतु प्रति क्यारी लगभग ढाई सौ ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट और 50 ग्राम जिंक सल्फेट मिलायें ताकि पौधे की अच्छी बढ़वार के लिए पर्याप्त



## धान में नर्सरी प्रबंधन की आवश्यक सलाह

पोषण मिले। पौध स्वस्थ रहे और उपज पर्याप्त मिले।

#### रोपणी में बीज बोने के पहले बीज उपचार

धान के बीज में से हल्के और पोचे बीजों को निकालने के लिए बीजों को नमक के घोल से शोधन करने की सलाह दी जाती है। इसके लिए 10 लीटर पानी में डेढ़ किलो नमक का घोल बनायें। घोल में बीजों को डालने के बाद आप देखेंगे कि ऊपर तैरने वाले बीज हल्के हैं और नीचे रह जाने वाले बीज ठोस और भारी हैं। हल्के बीजों को निकाल कर अलग कर लें। थोड़ी देर बाद ठोस बीजों को निकालकर साफ पानी में दो बार धोकर छाया में सुखायें और उपचारित करने के लिए ले जायें।

धान की पौध शाला हेतु बीज को ट्राईसाईक्लाजोल 75 प्रतिशत की 15 ग्राम मात्रा और स्ट्रेप्टोसाईक्लिन की 3 ग्राम मात्रा को 10 लीटर पानी में मिलाकर उपचारित करें। इस घोल में बीजों को 16 से 18 घंटे के लिए भिगोकर रख दें। इसके बाद बीजों को छानकर छाया में रखें। एक किलो बीज को 3 ग्राम काबे'डाजिम अथवा काबे'डाजिम और मैनकोजैब की मिश्रित दवा का 3 ग्राम अथवा कारबोक्सिन और थायरम की मिश्रित दवा की 3 ग्राम मात्रा लेकर उपचारित करें। इसके बाद कीटनाशी दवा थायो-मिथाक्जाम 75 डब्ल्यू.एस. की 3 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित करें और जूट की बोरियों से भिगोकर ढक दें। इसे लगभग 15 से 18 घंटे के लिए छोड़ दें। जब बीज में सफेद अंकुरण दिखाई देने लगे तब इस बीज को धान की नर्सरी में रोपें। ध्यान रहे कि यह प्रक्रिया शाम के समय ही करें। रोपणी में समय-समय पर फव्वारे से सिंचाई करते रहें और साथ ही अवलोकन भी करते रहें। कई बार नर्सरी में हॉपर या स्टैम बोरर कीटों का प्रकोप हो सकता है ऐसी स्थिति में इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 7.5 मिलीलीटर मात्रा प्रति टंकी मिलाकर छिड़काव करें। रोपणी से पौध निकालने के पाँच दिन पहले रोपणी में मैनकोजैब 75 डब्ल्यू.पी. की 3 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

#### पौध को रोपणी से निकालना :

अगर आप मेडागास्कर पद्धति जिसे श्री

(एस.आर.आइ.) पद्धति भी कहते हैं, से धान की बोनी कर रहे हैं तो 12 से 14 दिन के पौध, संकर धान में 21 दिन की पौध तथा अन्य प्रजातियों की पौध 25 दिनों में तैयार हो जाती है। तैयार नर्सरी की रोपाई 5 से 6 दिनों के भीतर करने के कारण पौधों में कल्लों की संख्या अधिक निकलती है जो पैदावार बढ़ाने में एक उत्तम कारक है। यदि किसी कारण आप समय पर बोनी नहीं कर पाते हैं और

पौध की आयु 20 दिन से अधिक की हो जाती है तो रोपाई करने के पहले पत्तियों के ऊपरी हिस्से को काट दें ताकि संभावित कीड़ों के अंडे नष्ट हो सकें।

मुख्य खेतों में रोपाई करने के लिये उतनी ही पौध निकालें जितनी की 3 से 4 घंटों में रोपी जा सके। पौध को अनावश्यक खेत में ना छोड़ें। अच्छी तरह मचाई किये हुये खेत में ही रोपा लगायें।

किसान भाईयों...

# सुपर नहीं 'खेतान' मांगिए

तिलहनी, दलहनी सहित सभी फसलों में चमत्कारिक परिणाम सबसे ज्यादा तत्वों की आपूर्ति करने वाला

K9 सुपर

जिंक सुपर

बोरॉन सुपर

यूरिया सुपर

**उपज बढ़ाने का सुपर फॉर्मूला**

## K स्वेतान K9+

### सिंगल सुपर फॉस्फेट

के साथ जिंक-बोरॉन-मैग्निशियम (दानेदार)

खेतान डालिए - मुनाफा निकालिए

**खेतान केमिकल्स**  
एण्ड फर्टिलाइज़र्स लि.  
फोन: 0731-4200748, 4753666

युनिट  
- निमरानी (म.प्र.) - झांसी एवं ग्राम मलवा, जिला फतेहपुर (उ.प्र.)  
- धीनवा (राज.) - राजनांदगांव (छ.ग.) - बहेज (भरुच, गुज.)

किसान हित में हमारा हित निहित है

डॉ. आशीष श्रीवास्तव  
कृषि महाविद्यालय, गंजबासौदा (म.प्र.)

**बीज** प्रत्येक फसल की आधारशिला है जिसके ऊपर बोयी गई फसल की अच्छी पैदावार निर्भर करती है। यदि बुआई के लिए उपयोग किया जाने वाला बीज स्वस्थ व निरोगी है तो बीजों का अंकुरण अच्छा होगा व पौधे निश्चित ही स्वस्थ होंगे।

# रोगों से फसल की सुरक्षा करता है बीज उपचार

## बीज उपचार के पश्चात ही करें बुवाई

बीजोपचार का मुख्य उद्देश्य बीज में लगने वाले रोगजनक या बीज के अंदर जीवित कोशिकाओं को संक्रमित करना या फिर अंकुरण के समय भूमि में फफूंद द्वारा बीज पर आक्रमण को रोकना है। मध्यप्रदेश में रबी मौसम में प्रमुख रूप से गेहूं, चना, मसूर, मटर आदि फसलों की खेती की जाती है। पिछले कुछ वर्षों से मध्यप्रदेश में दलहनी फसलों के क्षेत्रफल में गिरावट आ रही है। इसका प्रमुख कारण मृदा व बीज जनित रोगों के प्रभावी प्रबंधन के उपाय न होना है। बीजोपचार मृदा व बीज जनित रोगों के प्रबंधन में काफी कारगर साबित हुआ है।

बीजोपचार से प्रारंभिक अवस्था में होने वाली बीमारियों से बचाव आसानी से किया जा सकता है। जिसके प्रति किसानों को जागरूक होना होगा। बीजोपचार करने से बीजों से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से फसलों की सुरक्षा की जा सकती है। बीज के ऊपर सुरक्षा आवरण से मृदा, बीज व अन्य जीवों से सुरक्षा होती है। बीज अंकुरण बढ़ने से अंकुरण के औसत में सुधार से बीज की मात्रा कम लगती है। मृदा जन्य रोगों का प्रकोप कम होता है एवं अंकुरण का प्रतिष्ठत अधिक होता है।

### बीजोपचार के तरीके

**भौतिक विधि से उपचार:** इस विधि के अंतर्गत गर्म पानी, सूर्य ऊर्जा तथा विकिरणों द्वारा बीजोपचार किया जाता है। बीज के अंदर रहने वाले रोगजनकों जैसे गेहूं के कण्डवा रोग के लिए सूर्य के ताप से बीजों को उपचारित करते हैं। इसके लिए बीज को 4 घंटे पानी में भिगोने के बाद दोपहर मई की गर्मी में पक्के फर्श या टीन पर पतली तह में डालकर सुखाते हैं।

रोग प्रथक्करण विधि से भी बीज या पौध अवशेषों को बीज से अलग करके नष्ट करते हैं। इसके लिए बीज को 0.5 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोते हैं जिससे रोगी बीज ऊपर तैरकर आ जाते हैं। इनको बाहर निकाल कर नष्ट कर देते हैं और शेष बीजों को साफ पानी से धोकर, सुखाकर बोने के काम में लेते हैं। यह विधि गेहूं के सेहूँ रोग एवं ज्वार, बाजरा के अर्गट रोग को रोकने में सहायक होती है। विकिरण विधि से विभिन्न तीव्रता की अल्ट्रावायलेट किरणों को अलग-अलग समय पर बीजों पर से गुजारा जाता है जिससे बीज की सतह या उसके अंदर पाये जाने वाले रोगजनक नष्ट हो जाते हैं।

**रासायनिक विधि से बीजोपचार:** इस विधि से बीज को फफूंदनाशक रसायनों द्वारा उपचारित किया जाता है। यह विधि मृदा एवं बीज जनित रोगों की रोकथाम की सबसे आसान, सस्ती और लाभकारी विधि है। फफूंदनाशी रसायन बीज एवं मृदा जनित हानिकारक रोगजनकों को मार डालता है अथवा उन्हें फैलने से रोकता है। यह एक

संरक्षण कवच के रूप में बीज के चारों ओर घेरा बना लेता है। जिससे बीज को रोगजनक के आक्रमण एवं सड़ने से रोका जा सकता है। इस विधि में आवश्यकतानुसार स्वच्छ व स्वस्थ बीज को लेकर फफूंदनाशक दवा की अनुशंसित मात्रा मिलाते हैं। बीज की अधिक मात्रा होने पर बीजोपचार यंत्र का उपयोग करते हैं तथा बीज की मात्रा कम होने पर बीज व दवा दोनों को मटका या प्लास्टिक की बोरी में डालकर 10 से 15 मिनट तक हिलाते हैं। जिससे फफूंदनाशक दवा की परत बीजों पर चढ़ जाये।

तत्पश्चात उपचारित बीज को छाया व हवादार जगह में सुखाकर बुआई करते हैं। बीजोपचार के लिए उपर्युक्त फफूंदनाशक दवाओं में थाइरम, कार्बेन्डाजिम, कार्बक्सिन ट्राइकोडरमा व स्यूडोमोनास आदि का प्रयोग किया जाता है। जैविक फफूंदनाशकों द्वारा बीजोपचार मृदा जनित बीमारियों के प्रबंधन में कारगर पाया गया।

जैविक फफूंदनाशकों में ट्राइकोडर्मा या स्यूडोमोनास की 5.0 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से अथवा कार्बाक्सिन के बाद ट्राइकोडर्मा को मिलाकर बीजोपचार करने से उगरा व सूखा जड़ सड़न रोग का प्रबंधन काफी असरकारक रहा है (5.0 ग्राम ट्राइकोडर्मा के साथ 2.0 ग्राम कार्बाक्सिन प्रति किलो बीज की दर से प्रयोग करें।)

### बीजोपचार करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

► इस बात का विशेष ध्यान रखें कि यदि बीजोपचार के लिए फफूंदनाशक दवाओं के साथ-साथ कीटनाशक दवाओं का भी प्रयोग किया जा रहा है तो सर्वप्रथम बीज को फफूंदनाशक दवाओं से उपचारित करें तत्पश्चात कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करे व अंत में राइजोबियम अथवा पी. एस. बी. कल्चर से बीजों को उपचारित करें।

► बीजों को बुआई से 24 से 48 घंटे पूर्व भी उपचारित किया जा सकता है। इन परिस्थितियों में विशेष ध्यान रखें कि उपचारित बीज में खाद उर्वरकों को मिलाकर न रखें।



► राइजोबियम अथवा पी.एस.बी. कल्चर आदि दवाओं को खरीदते समय ध्यान दें कि उसमें डेले न हो। यदि हों तो बीजोपचार से पूर्व उन्हें बारीक अवश्य कर लेंवे अन्यथा बोनी करते समय सीडड्रिल में

फंसने की संभावना रहती है।  
► बीजोपचार करते समय रासायनिक दवाओं को शरीर के संपर्क में आने से बचाने हेतु हाथ के दस्ताने व मुँह पर मास्क आदि का प्रयोग करें।

► बीजोपचार करते समय किसी भी प्रकार से धूम्रपान एवं खानपान की वस्तु को सेवन न करें।

► फफूंदनाशक दवाओं को खरीदते समय उनके पैकेट पर उनके बनने से लेकर प्रभावित रहने कि तिथि व विधि लिखी होती है। इसे देखकर ही प्रयोग करें।

► बुआई में प्रयोग होने वाले बीज को फफूंदनाशक से उपचारित करने के बाद खाद्यान एवं मवेशियों से दूर रखें।

► बिना पूर्व जानकारी के दवाओं का प्रयोग न करें।

► उपयोग किये जाने वाले फफूंदनाशक रसायन की मात्रा तथा उसके साथ सम्मिश्रित होने वाले अन्य रसायनों के संबंध में भी जानकारी होना आवश्यक है।

## खेती को फायदेमंद बनाने का नायाब तरीका सीखें

क्या आपकी जमीन से खेती करते-करते आपका नाम आपकी मिल रही है जिससे आप अपने खेती के खर्च को पूरा कर सकते? क्या आप खेती से निरंतर हो गए हैं और एक नया उपाय खोज रहे हैं जो आपको अधिक लाभ दे सके? यदि हाँ, तो हम आपके लिए एक नया अवसर लेकर आए हैं। आपकी खेती जमीन, खेतों से खाली नकल-नकलें को कमाई करने के लिए हमारे साथ जुड़ें। हम आपको जमीन के ध्यान से लेकर फसल लगाने, उगावने और उगावने के तक-पारितक विषयों तक की पूरी विवरण जानकारी और मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

हम आपसे एक खेती की बात कर रहे हैं जो आपको अधिक लाभ प्रदान कर सकती है। AT और BP के पौधों की खेती एक बहुत ही उपयुक्त विकल्प है, जो आपको अधिक मुनाफा दे सकती है। इन पौधों की विशेषता और पोषण के कारण, इससे बाजार में उतम मूल्य मिल सकता है और आपको अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

एक एकड़ जमीन में 800 ऑस्ट्रेलियन डॉलर और 800 किलो किराई कसत की खेती कर के आप साल का लाखों रुपये कमा सकते हैं।

- 30 सालों में 7 बार देर का सर्वश्रेष्ठ किटलन का अवार्ड प्राप्त करने वाले अनुभवी किसानों के साथ एक टिचानिस्ट।
- देश का सर्वप्रथम सर्टिफाइड ऑर्गेनिक हर्बल फार्मस के साथ मां दत्तेश्वरी हर्बल समूह का समर्थन और संयुक्त विपणन।
- कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मानों के साथ-साथ किलोमिटर फार्मर/रिसेट फार्मर ऑफ इंडिया का अवार्ड भी दिया गया है मां दत्तेश्वरी हर्बल समूह के डॉक्टर राजाराम त्रिपाठी को।

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें:

**मुख्य कार्यालय: मां दत्तेश्वरी हर्बल ग्रुप**  
151, हर्बल इस्टेट, कोडागांव बस्तर (छत्तीसगढ़) 494226

रासायनीय कार्यालय: जी 14 हर्बल इस्टेट, एचआर टावर के बगल में, अमरावती नगर (पुरानी अमरावती कॉलोनी) रिंग रोड-1, रायपुर (छत्तीसगढ़) - 492013

मो. : 9425265105  
फोन : 0771-2263433

सूचना: कृपया कार्यालयीन दिवसों में सुबह 11:00 से 5:00 तक के बीच ही फोन करें।

- दीपक चौहान, (वैज्ञानिक- कृषि अभियांत्रिकी)
- डॉ. मृगेन्द्र सिंह ● डॉ. अल्पना शर्मा
- डॉ. बृजकिशोर प्रजापति ● भागवत प्रसाद पंड्रे
- कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल (म.प्र.)

# उन्नत तकनीक से करें बीज उपचार

**ह**मारे देश के किसान भाई फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रयत्न करते हैं। फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक खेती का इस्तेमाल होता है। फसल उत्पादन करने के लिए बीज एक मूल उद्देश्य है। उत्पादकता बढ़ाने के लिए उत्तम बीज का होना भी आवश्यक है।

उत्तम बीजों के चुनाव के बाद उनका उचित बीजोपचार भी जरूरी है, क्योंकि बहुत से रोग बीजों से फैलते हैं। अतः रोगजनकों, कीटों एवं असामान्य परिस्थितियों से बीज को बचाने के लिए बीजोपचार एक महत्वपूर्ण उपाय है। यदि बीज का सही शोधन किया जाए व सही समय पर बुवाई की जाए तो बहुत ही अच्छी पैदावार पाई जा सकती है। आज ऐसे किसानों की संख्या बहुत अधिक है जो अनुपचारित बीज बोते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें खेती में अच्छा लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आधुनिक खेती हेतु किसान भाइयों के लिए सीड ट्रीटिंग ड्रम का उपयोग करना अति आवश्यक है।

## व्या है सीड ट्रीटिंग ड्रम

सीड ट्रीटिंग ड्रम एक बीज उपचारक उपकरण है, जिसमें बीज और रासायनिक दवाइयों को यांत्रिक रूप से मिलाकर बीज का शोधन किया जाता है। यह उपकरण स्टैंड (फ्रेम), ड्रम, शाफ्ट (रॉड) और हैंडल (हथ्थे) से मिलकर बना होता है। इस उपकरण का सबसे प्रमुख भाग ड्रम है, जिसे एक विशेष प्रकार की गैल्वेनाइज्ड चादर से बनाया गया है। गैल्वेनाइज्ड चादर होने के कारण इसकी ऊपरी सतह पर जंग नहीं लगता। साथ ही ड्रम के अंदर एक विशेष प्रकार की कोटिंग होने के कारण वह पूरी तरह चिपका और सुरक्षित होता है, चिपका होने के कारण बीज



आसानी से दवाई से मिल जाता है। साथ ही बीज की मिलावट एक जैसी ही होती है व किसी प्रकार की कोई रूकावट बीज के शोधन में नहीं आती। ड्रम को इस तरह बनाया गया है कि बीज अंदर में सुरक्षित रहता है और टूटता भी नहीं, मूंगफली या किसी प्रकार का बीज भी इसमें आसानी से शोधन किया जा सकता है। ड्रम को स्टैंड (फ्रेम) के ऊपर सुरक्षित ढंग से फिट किया गया है, ड्रम के अंदर शाफ्ट की एक्सिस तिरछी होने के कारण ड्रम अद्ध गोलाई में घूमता है, इसलिए ड्रम में डाली हुई दवाईयां आसानी से बीज से लग जाती हैं। ड्रम के ऊपर लॉक करने की सुविधा दी गई है, जिससे बीज सुरक्षित रहता है साथ में बीज

नीचे नहीं गिरते। इस उपकरण का स्टैंड भी काफी मजबूती से बना होता है एवं स्टैंड के चारों निचले हिस्से पर गोलाई वाला आधार दिया गया है, जिसके कारण उपकरण उबड़-खाबड़ जमीन, बारिश में भी समतल आधार पर बना रहता है। इस उपकरण की क्षमता मानव क्षमता के ऊपर निर्भर करती है, फिर भी सामान्यतः 75 से 100 किलो/प्रति घंटा तक बीज का शोधन किया जा सकता है। एक ही बार में 15-20 किलो का शोधन बहुत ही सरल तरीके से किया जा सकता है। यह उठाने में हल्का होता है एवं इस उपकरण की अनुमानित कीमत लगभग 2500-3000 रुपये तक है।



## सीड ट्रीटिंग ड्रम का उपयोग कैसे करें

- ▶ सीड ट्रीटिंग ड्रम का उपयोग करने से पूर्व यह देख ले की वह साफ और सही अवस्था में हो।
- ▶ ड्रम के भीतरी हिस्से साफना होने पर उसे झाड़ू की सहायता से साफकरें, गीले कपड़ों का प्रयोग बिल्कुल भी न करें, उससे इसके अंदर के भाग में जंग लग सकती है।
- ▶ सीड ट्रीटिंग ड्रम के सभी नट एवं बोल्ट को अच्छी तरह से जांच लें।
- ▶ अब ड्रम के बाहरी सतह में लगे लॉक को खोल लें।
- ▶ अब बीजोपचार हेतु बीज और जरूरत अनुसार रासायनिक दवाई/पाउडर को ड्रम में डाल दें एवं आवश्यकता पड़ने पर बहुत ही अल्प मात्रा में पानी डाल दें, ताकि बीज और रासायनिक दवाई/ पाउडर का मेल सही तरीके से हो पाए।
- ▶ अब ड्रम को लॉक कर दें।
- ▶ अब ड्रम को करीब 15-20 बार हैंडल के माध्यम से घुमाएं।

- ▶ घुमाने के पश्चात ड्रम को 1-2 मिनट के लिए छोड़ दें, ताकि रासायनिक दवाई अच्छे से बीज में लग जाए।
- ▶ ड्रम के ठीक नीचे एक बड़ा प्लास्टिक (पॉलिथिन) शीट/चादर या कंटेनर/ बर्तन रखें।
- ▶ अब, ड्रम के लॉक को खोल लें।
- ▶ अब उपचारित बीज को ड्रम से बाहर निकाल कर प्लास्टिक शीट या बर्तन में रखें एवं बचे हुए बीजों को झाड़ू की मदद से निकाल लें।

## सीड ट्रीटिंग ड्रम से बीजोपचार के फायदे

- अधिक अंकुरण।
- अधिक प्रबल पौधे।
- आरम्भिक रोगों का प्रभावी नियंत्रण।
- दुबारा बुवाई करने की आवश्यकता नहीं।
- कम समय, श्रम एवं लागत।
- अधिक फसल उत्पादन।
- प्रतिकूल परिस्थितियों में भी एक समान फसल।

## ध्यान रखने हेतु बातें :-

- बीजोपचार हेतु खरीदी गई दवाई की अंतिम तिथि अवश्य देख लें।
- रासायनिक दवाई का प्रयोग संस्तुत मात्रा में ही करें, कम या अधिक मात्रा में नहीं।
- बीज शोधन के समय हाथ में दस्ताने तथा चहरे पर साफ कपड़ा अवश्य बांधें।
- बीज शोधन के पश्चात हाथ-पांव व चेहरा साबुन से भली-भांति साफ कर लें।
- बीजोपचार के बाद उपचारित बीज को 4-5 घंटे के अंदर बुवाई कर दें।



**अपने हर बीज को बनाएं सशक्त, दमदार एवं बेहद शक्तिशाली वीटाबीज**



**हर बच्चे को पोलियो का टीका, हर बीज को वीटावैक्स का टीका**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें हमारे टोल फ्री नम्बर पर -1800-102-1022

**इंडिया का प्रणाम हर किसान के नाम**

● डॉ. एम.के. श्रीवास्तव ● डॉ. पवन कुमार अमृते  
पादप प्रजनन एवं अनुवांशिकी विभाग  
जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर (म.प्र.)

**सो** याबीन भारत वर्ष की एक बहुत ही महत्वपूर्ण तिलहनी फसलों में से एक है। इसकी खेती खरीफ के मौसम में प्रमुख रूप से की जाती है। भारत वर्ष का 50 प्रतिशत से अधिक सोयाबीन का उत्पादन केवल म.प्र. में होता है जो कि देश में सर्वाधिक है।

भारत में वर्तमान में 119.4 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सोयाबीन की खेती की जाती है तथा इसका उत्पादन 136.3 लाख टन है और उत्पादकता 1200 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। म.प्र. में इसका क्षेत्रफल 52.4 लाख हेक्टेयर, उत्पादन लगभग 67.3 लाख टन और उत्पादकता 1285 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में वर्ष 1967 से अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना द्वारा उन्नत तथा विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के अनुकूल अधिक उपज व उच्च गुणवत्ता वाली जातियों तथा उन्नत सस्य एवं पौध संरक्षण तकनीकों के विकास ने सोयाबीन की खेती के नये आयाम खोल दिये हैं। वर्तमान में सोयाबीन उत्पादन को सीमित करने वाली कुछ प्रमुख समस्याएँ हैं जिसके कारण उत्पादन एवं उत्पादकता में निरंतर गिरावट दर्ज की जा रही है एवं किसान भाइयों को आर्थिक क्षति उठाना पड़ रही है। इन समस्याओं में-

- ▶ चारकोल जड़ सड़न, पीला मोजैक एवं झुलसन।
- ▶ नए कीटों का प्रकोप जिसमें तने की मक्खी व चक्रभृंग (तना छेदक कीट), अर्ध कुन्डलक इल्ली, कम्बल कीट, तम्बाखू की इल्ली, अलसी की इल्ली, चने की फली छेदक (पत्ती भक्षक कीट) एवं सफेद मक्खी।
- ▶ भूमि में आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों का असंतुलन।
- ▶ भूमि में कार्बनिक पदार्थ की कमी।
- ▶ समुचित जल प्रबंध का अभाव एवं अवर्षा की स्थिति में सिंचाई साधनों की कमी।
- ▶ खरपतवार की समस्या।
- ▶ मौसम की प्रतिकूलता जिसमें क्रान्तिक अवस्थाओं में लम्बा सूखा, पकने की अवस्था में वर्षा का होना आदि।

#### भूमि का चयन एवं तैयारी

- ▶ रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गर्मी में गहरी जुताई करें। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई के बाद 15-30 दिवस खेत खाली छोड़ने पर जमीन के नीचे आश्रय पाने वाले कीटों एवं भूमि जनित बीमारियों के अवशेष नष्ट हो जाते हैं तथा भूमि की जलधारण क्षमता एवं दशा में सुधार होता है।
- ▶ गोबर की खाद, कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट तथा सिंगल सुपर फास्फेट को खेत में समान रूप से छिड़कने के बाद बोनी के लिए जुताई करना श्रेष्ठकर है।
- ▶ खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाये एवं खरपतवार नष्ट हो जायें इस प्रकार जुताई करना चाहिए।
- ▶ बुआई के पूर्व खेत के निचले हिस्से में प्रति 20 मीटर अंतराल पर जल निकास नाली का निर्माण अवश्य करें जिससे अधिक वर्षा की दशा में पानी का निकास आसानी से हो सके एवं अवर्षा की दशा में सिंचाई उपलब्ध करा सकें।

#### बुवाई का समय

- ▶ सोयाबीन की बुवाई 22 जून (4-5 इंच वर्षा होने पर) से जुलाई के प्रथम सप्ताह के बीच उत्तम परिणाम देती है। इसमें परिस्थितिवश कुछ दिन आगे पीछे होना कोई विशेष प्रभाव नहीं डालता।

#### जातियों का चयन

- ▶ सोयाबीन की जातियों का चुनाव उस क्षेत्र में वर्षा का औसत एवं भूमि के प्रकार को ध्यान में रखकर अर्थात् क्षेत्रीय अनुकूलता के आधार पर ही करना चाहिए।

**मध्यप्रदेश के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के लिए सोयाबीन की अनुकूल जातियाँ**

**बीज दर :** ▶ सोयाबीन की बीज दर 60-80 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर निर्धारित है। ▶ जब बीज छोटे हों या ज्यादा फैलने वाली प्रजाति हो तो 60-70 कि.ग्रा. एवं बड़ा बीज हो तथा कम फैलने वाली प्रजाति हो तो 80-85 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज



## सोयाबीन की उन्नत खेती

कृषि जलवायु क्षेत्र	जिले	उपयुक्त प्रजातियाँ
छत्तीसगढ़ का मैदान	बालाघाट तथा वारासिवनी	जे.एस. 335, जे.एस.93-05, जे.एस. 95-60,,जे.एस.20-34, जे. एस.20-29,जे.एस.20-98, जे.एस.20-116
कैमोर का पठार तथा सतपुड़ा की पहाड़ियाँ	जबलपुर, कटनी, पन्ना, सतना, रीवा, सीधी, राहडोल, उमरिया, डिंडोरी, मंडला, सिवनी	जे.एस.335, जे.एस. 95-60, जे.एस. 20-34, जे.एस. 20-69, जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस. 20-94, जे.एस.21-72,आर.वी.एस.एम. 2011-35
विन्ध्या पठार	मोपाल, सीहोर, विदिशा, सागर, दमोह, रायसेन	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, जे. एस. 95-60, जे. एस. 20-34, जे. एस. 20-29, जे.एस.20-69, जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46,ए.एम.एम.बी.100-39
मध्य नर्मदा घाटी	नरसिंहपुर, होशंगाबाद, हरदा	जे.एस. 335, जे. एस. 95-05, एन.आर.सी. 37, जे. एस. 20-29, जे.एस.20-69, जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35, ,ए.एम.एम.बी.100-39
गिर्द क्षेत्र	ग्वालियर, मिन्ड, मुरैना, शिवपुरी, गुना	जे.एस.335, जे. एस. 93-05,जे. एस. 95-60, जे. एस. 20-34, जे. एस. 20-69,, जे. एस. 20-98, एन.आर.सी.-86, आर.वी.एस. 2001-4, आर.वी.एस. 24, जे.एस.21-72, आर.वी.एस. 2002-4, आर.वी.एस.एम. 2011-35
बुंदेलखंड क्षेत्र	छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया	जे.एस. 335, जे.एस. 93-05, एन.आर.सी. 37, जे. एस. 95 -60, 20-34, 20-29, जे.एस. 20-98, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35
सतपुड़ा का पठार	छिंदवाड़ा, बैतूल	जे.एस. 335, जे.एस. 93-05,जे. एस. 95-60, एन.आर.सी.37, एन.आर.सी. 86, जे.एस 20-34, जे.एस.20-69,जे.एस.20-98, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस. 21-72, एन.आर.सी. 127, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35
मालवा का पठार	मंदसौर, रतलाम, राजगढ़, शाजापुर, उज्जैन, इंदौर, देवास तथा धार का कुछ क्षेत्र	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, जे. एस.95-60, जे. एस 20-34, जे. एस.20-29, एन.आर.सी.37, एन.आर.सी. 7, एन.आर.सी. 86, आर.वी.एस. 2001-4, आर.वी.एस. 24, आर.वी.एस. 18, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, एन.आर.सी. 127, एन.आर.सी. 130, आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35, ए.एम.एम.बी.100-39
निमाड़ घाटी	खंडवा, खरगोन, बडवानी,	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, जे. एस. 95-60, जे.एस.20-34, जे. एस. 20-29, एन.आर.सी. 37, एन.आर.सी. 86, आर.वी.एस. 2001-4, आर.वी.एस. 24, आर.वी.एस. 18,, जे.एस.20-116, जे.एस.20-94, जे.एस.21-72, एन.आर.सी. 127, एन.आर.सी. 130,आर.एस.सी.10-46, आर.वी.एस.एम. 2011-35, ए.एम.एम.बी.100-39
झाबुआ की पहाड़ियाँ	झाबुआ तथा धार का कुछ क्षेत्र	जे.एस. 335, जे. एस. 93-05, एन.आर.सी. 7, एन.आर.सी. 86, जे. एस. 95-60, आर.वी.एस. 18, जे.एस.20-34, जे.एस.21-72, आर.वी.एस.एम. 2011-35

का प्रयोग करना चाहिए।

#### बीजोपचार :

- ▶ बीजोपचार के लिए हमें एफआई.आर. को अपनाना चाहिये।
- ▶ कार्बाक्सिन 37.5 प्रतिशत+थायरम 37.5 प्रतिशत, 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज या थायोफिनेट मेथाइल+पाइराक्लास्ट्रोबिन (50 प्रतिशत एफ.एस.) 1.5 मि.ली / कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।
- ▶ या पेनफ्लुफेन 13.28 प्रतिशत+ ट्राईफ्लाक्सीस्ट्रोबिन 13.28 प्रतिशत की 1 मि.ली. प्रति किग्रा बीज।
- ▶ या ट्राइकोडर्मा हर्जियानम नामक जैविक फफूंदनाशक की 5 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर सकते हैं, इससे बीज एवं मृदा जनित रोगों पर नियंत्रण पाया जा सकता है।
- ▶ जहाँ पर तना मक्खी, सफेद मक्खी एवं पीला मोजैक की समस्या ज्यादा हो वहाँ पर थायामेथोक्जाम 70 डब्ल्यू.एस. नामक कीटनाशक दवा से 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर

से बीज उपचारित कर सकते हैं।

- ▶ फफूंदनाशक एवं कीटनाशक दवा के उपचार के पश्चात् 5-10 ग्राम ब्रेडीराइजोबियम कल्चर एवं 5-10 ग्राम पी.एस.बी. कल्चर से प्रति किलो बीज उपचारित करके बुवाई करें।
- ▶ भूमि की भौतिक दशा एवं गुणों को बनाये रखने तथा उत्पादन वृद्धि हेतु के लिए 5-10 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट या 5 टन फसलों का बारीक किया हुआ कचरा या भूसा और 5 टन कम्पोस्ट प्रति हेक्टेयर का उपयोग अच्छा परिणाम देता है।
- ▶ जहाँ पर मृदा परीक्षण के उपरान्त जिंक एवं बोरान तत्व की कमी पाई जाये, वहाँ 7.5 कि. ग्रा. प्रति दो वर्ष के अंतराल पर जिंक एवं 1.0-1.5 कि.ग्रा. बोरान प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देना लाभकारी है।
- ▶ रासायनिक उर्वरकों में फास्फोरस की पूरी मात्रा सिंगल सुपर फास्फेट के रूप में देने पर गंधक पूर्ति हो जाती है

( शेष पृष्ठ 14 पर )

- डॉ. स्वप्निल दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख
- डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)
- श्री सुनील केथवास, प्रक्षेत्र प्रबंधक  
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)

**फ** सलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृषक अपनी कम से कम उपलब्ध भूमि में अधिक से अधिक उत्पादन लेना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि फसल व किस्मों का चुनाव भूमि के अनुरूप, जलवायु, मौसम एवं अन्य उपलब्ध संसाधनों के आधार पर करना चाहिए। फसलों की किस्मों का चुनाव करते समय भूमि का प्रकार, क्षेत्र विशेष की जलवायु, बुवाई का समय, पानी की उपलब्धता, क्षेत्र विशेष में कीट-व्याधि, रोग का प्रकोप व आगामी मौसम में बोये जाने वाली प्रस्तावित फसलों के आधार पर करना चाहिए। मध्यप्रदेश के सभी जिलों में कृषकों के द्वारा सोयाबीन, धान, उड़द, अरहर फसलों का उत्पादन लिया जाता है।

भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर एवं राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर द्वारा विकसित एवं अनुशंसित सोयाबीन की किस्मों की विस्तृत जानकारी दी जा रही है। उन्नतशील प्रजातियों का चयन करके कृषक 15-20 प्रतिशत तक उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं।

**सोयाबीन की अनुशंसित व नवीनतम किस्में**

किस्म	अनुशंसित वर्ष	पकने की अवधि (दिन)	अधिकतम उपज (क्वि./हे.)	फूल
जे.एस.- 22-12	2024	90	21	सफेद
जे.एस.- 22-16	2024	91	21	सफेद
एन.आर.सी.-157	2023	92	16	बैंगनी
एन.आर.सी.-152	2023	89	18	बैंगनी
एन.आर.सी.-150	2023	91	18	सफेद
एन.आर.सी.-131	2023	92	15	बैंगनी
जे.एस.-21-72	2023	97	21	सफेद
आर.वी.एस.एम.-2011-35	2021	98	22	सफेद
एन.आर.सी.-130	2021	92	15	बैंगनी
एन.आर.सी.-138	2021	93	18	सफेद
एन.आर.सी.-142	2021	97	20	बैंगनी
आर.वी.एस.-76	2021	101	21	बैंगनी
जे.एस.-20-116	2019	95-100	22	सफेद
जे.एस.-20-94	2019	97	21	बैंगनी
एन.आर.सी.-127	2018	102	18	सफेद
जे.एस.-2098	2018	96-101	21	सफेद
आर.वी.एस.-18	2017	92	20	सफेद
आर.वी.एस.-2002-4	2017	92-96	19	सफेद
जे.एस.-2069	2016	93-95	19	सफेद
जे.एस.-2034	2015	86-88	21	सफेद
जे.एस.-2029	2014	93-96	21	सफेद
आर.वी.एस.-2001-4	2014	101-105	25	सफेद

**सोयाबीन की उन्नत किस्म**

**आरवीएसएम-11-35**

- ▶ पकने की अवधि: 94-98 दिन
- ▶ औसत उत्पादन: 21-22 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं सफेद फूल, फल्लियों पर रोए
- ▶ फल्लि चटकने की समस्या नहीं
- ▶ पीला मोजेक एवं चारकोल रॉट के प्रति प्रतिरोधकता
- ▶ हार्वेस्टर से कटाई के लिये उपयुक्त

**जे.एस.- 21-71**

- ▶ पकने की अवधि: 97दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं सफेद फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 20-21 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ पीला मोजेक, चारकोल रॉट एवं राइजोक्टोनिया एरियल ब्लाइट के प्रति प्रतिरोधी



**खरीफ की उन्नतशील प्रजातियों से पाएं सर्वाधिक उत्पादन**

**एनआरसी-130**

- ▶ पकने की अवधि: 92 दिन
- ▶ औसत उत्पादन: 15 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ सीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल एवं फल्लियों पर रोए
- ▶ बीज की नाभि के ऊपर भूरे रंग का टीका
- ▶ चारकोल रॉट एवं एन्थ्रेक्नोज के प्रति प्रतिरोधकता

**एनआरसी-131**

- ▶ पकने की अवधि: 92 दिन
- ▶ औसत उत्पादन: 15 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि व चिकनी फल्लियां
- ▶ चारकोल रॉट एवं एन्थ्रेक्नोज के प्रति प्रतिरोधकता

**एनआरसी-138**

- ▶ उच्च अंकुरण क्षमता
- ▶ पकने की अवधि: 90-93 दिन
- ▶ सीमित वृद्धि एवं सफेद फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 18-20 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ पीला मोजेक के प्रति प्रतिरोधकता
- ▶ हार्वेस्टर से कटाई के लिये उपयुक्त

**एनआरसी-142**

- ▶ पकने की अवधि: 97 दिन
- ▶ सीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल
- ▶ कुनिटज ट्रिप्सिन इन्हिबिटर व लायपोक्सीजिनेज एसिड-

**2 मुक्त प्रथम किस्म**

- ▶ औसत उत्पादन: 20 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ पीला मोजेक के लिए प्रतिरोधी

**एनआरसी-150**

- ▶ पकने की अवधि: 91 दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं सफेद फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 18 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ लिपोक्सीजिनेज-2 मुक्त किस्म
- ▶ पीला मोजेक के लिए मध्यम प्रतिरोधी
- ▶ चारकोल रॉट प्रतिरोधी किस्म

**एनआरसी-154**

- ▶ पकने की अवधि: 89 दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 18 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ लिपोक्सीजिनेज-2 व ट्रिप्सिन इन्हिबिटर मुक्त किस्म
- ▶ तना मक्खी व चक्रभृंग के लिए प्रतिरोधी

**एनआरसी-157**

- ▶ पकने की अवधि: 92 दिन
- ▶ अर्द्धसीमित वृद्धि एवं बैंगनी फूल
- ▶ औसत उत्पादन: 16 क्विंटल/हेक्टेयर
- ▶ देरी से बुवाई के लिए उपयुक्त

(शेष पृष्ठ 14 पर)

सभी फसलों के लिए उपयोगी

**देवपुत्र**

अमृत (डीकम्पोस्ट)  
उत्कृष्ट प्रमाणित बीज  
कार्बनिक खाद मिश्रण  
सिटी कम्पोस्ट | वर्मी कम्पोस्ट  
ऑर्गेनिक मेन्यूअर  
प्रॉम खाद

**गंगा एवं जय जवान**

NPK मिक्स फर्टिलाइजर  
12:32:06 • 20:20:10  
08:32:08 • 15:15:7½

**रत्नम**

जिंक सल्फेट 21%  
सिंगल सुपर फॉस्फेट (पावडर एवं दानेदार)  
NPK मिक्स फर्टिलाइजर  
12:32:06 • 20:20:10  
08:32:08 • 15:15:7½

सभी सहकारी समितियों एवं विपणन संघ केन्द्रों पर उपलब्ध

दिव्यज्योति एग्रीटेक प्रा. लि.

चातक एग्रो (इं) प्रायवेट लिमिटेड

बालाजी फॉस्फेट्स लिमिटेड

305, लक्सन एन-यू, 12/5, लखनाज (जावरा कम्पाउण्ड), इन्दौर (म.प्र.)  
फोन: 0731-4064501, 4087471, मोबाइल: 98272-47057, 98270-90267, 94251-01385

## विश्व पर्यावरण दिवस पर नेशनल सेमिनार आयोजित



**भोपाल।** आरकेडीएफ यूनिवर्सिटी, भोपाल में विश्व पर्यावरण दिवस पर नेशनल सेमिनार आयोजित किया गया जिसका विषय था एनवायरमेंटल माइक्रो प्लास्टिक एंड ह्यूमन हेल्थ। यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफेसर विजय के. अग्रवाल, डॉ. भरत शरण सिंह, डॉ. आर.आर. तिवारी, डॉ. वी.के. सेठी ने पर्यावरण संरक्षण और माइक्रो प्लास्टिक का एनवायरनमेंट पर क्या प्रभाव या दुष्प्रभाव पड़ता है, विषय पर अपने विचार व्यक्त किया

और तीन क्रूरिड्यूस, रीयूज, रिप्लेस के कांसेप्ट को जीवन शैली में अपनाने पर जोर दिया। वहीं यह भी बताया कि प्लास्टिक का उपयोग किस तरीके से कम से कम किया जाना चाहिए। विजय गुप्ता ने अवनी वेलफेयर के द्वारा सीड बॉलस के द्वारा प्लांटेशन करने के फायदे बताए साथ ही पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्ष का उपयोग पर अपना व्यक्तव्य दिया। वहीं डॉ. स्मिता राशी ने सभी को सीड बॉलस वितरित किए।

## वैज्ञानिकों ने किसानों से साझा की कृषि तकनीकी

**जबलपुर।** विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत ग्राम कैलवास में कृषि से संबंधित विविध विषयों पर जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के संचालक विस्तार सेवाएं डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, निदेशक खरपतवार अनुसंधान निदेशालय डॉ. जे.एस. मिश्रा, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रदुमन सिंह, पौध संरक्षण वैज्ञानिक डॉ. प्रमोद कुमार गुप्ता एवं उद्यानिकी वैज्ञानिक डॉ. अक्षता तोमर द्वारा कृषकों को तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया।



इस अवसर पर डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा ने प्राकृतिक खेती के महत्व पर प्रकाश डाला, वहीं डॉ. जे.एस. मिश्रा एवं डॉ. प्रदुमन सिंह ने खरपतवार प्रबंधन की जानकारी दी। डॉ. प्रमोद गुप्ता ने पौध संरक्षण तकनीकों पर किसानों को प्रशिक्षित किया। इस अभियान का मुख्य

उद्देश्य किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से अवगत कराना एवं प्राकृतिक खेती, जल संरक्षण, फसल विविधिकरण व जैविक खेती का प्रचार-प्रसार करना साथ ही आत्मनिर्भर किसान और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में बेहतर कदम है।

इस कार्यक्रम में कृषि विभाग से कृषि विस्तार

अधिकारी, पशुपालन, कृषि अभियांत्रिकी, मत्स्य पालन आदि विभागों के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

साथ ही कैलवास ग्राम के सचिव बुनेश झरिया एवं सरपंच गोपाल प्रसाद यादव की सक्रिय सहभागिता रही। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पुरुष एवं महिला किसानों ने भाग लेकर लाभ प्राप्त किया।



### नसरुल्लागंज में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

**श्री कल्पेश कुमार सरावगी**

मे. सरावगी ट्रेडर्स संजय मार्केट, उमरिया  
जिला-उमरिया (म.प्र.) मो. 9425181347

## विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

**मुरैना।** भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के निर्देशन में संचालित विकसित कृषि संकल्प अभियान के दौरान विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन विकासखण्ड पोरसा, अम्बाह, मुरैना एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, मुरैना पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजित किया गया।

इस विशेष दिवस पर इस वर्ष की थीम "प्लास्टिक प्रदूषण को हटाये" अभियान पर केन्द्रित एक जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन ग्राम माता बसैया में आयोजन किया गया।

जिसमें वर्षा के मौसम में अधिकतम पौधों का रोपण करने और पौधे बचाने का संकल्प उपस्थित कृषकों को दिलाया गया। जागरूकता एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम में पी.सी. पटेल, उप संचालक कृषि विभाग, मुरैना, डॉ. संदीप सिंह तोमर, ऑ.कृ.अनु.केन्द्र एवं कृषि विज्ञान केन्द्र मुरैना के केन्द्र प्रमुख डॉ. प्रशान्त कुमार गुप्ता तथा वैज्ञानिक डॉ. पी.के.एस. गुर्जर, डॉ. बी.एस. कंसाना, ग्राम सरपंच लायक सिंह गुर्जर एवं स्व-सहायता समूह/एफ.पी.ओ. के सदस्यों सहित लगभग 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

## इफको नैनो प्रशिक्षण आयोजित

**कटनी।** इफको द्वारा जिले की सहकारी समितियों एवं शाखा प्रबंधकों का नैनो उर्वरक आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. डी.के. सोलंकी राज्य विपणन प्रबंधक इफको भोपाल थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप संचालक कृषि मनीष मिश्रा, विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर पतले महाप्रबंधक जिला सहकारी केंद्रीय बैंक जबलपुर थे जबलपुर एवं पंकज अटोलिया विपणन अधिकारी जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित जबलपुर थे।

कार्यक्रम में राजेश कुमार मिश्रा उप महाप्रबंधक इफको जबलपुर द्वारा कल्चर के उपयोग कृषि में आज की सबसे बड़ी आवश्यकता बताई। साथ ही उन्होंने इसके आर्थिक पहलुओं पर भी प्रकाश डाला। उनके द्वारा संतुलित उर्वरक उपयोग में नैनो उर्वरकों के उपयोग के महत्व पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने नैनो उर्वरक से संस्थाओं को होने वाले लाभ की जानकारी भी प्रदान की। राज्य विपणन प्रबंधक डॉ. डी.के. सोलंकी द्वारा नैनो उर्वरक टेक्नोलॉजी विशेषकर नैनो डीएपी कॉपर एवं जिंक के फसलों पर पड़ने वाले प्रभाव तथा उपयोग की सही विधि पर प्रकाश

डालते हुए बताया कि किसान भाई अक्सर स्प्रे करते समय नैनो उर्वरक की मात्रा को निर्धारित मात्रा से काम डालते हैं जिसके कारण वांछित परिणाम नहीं प्राप्त होता है, इस पर विशेष ध्यान दें। उन्होंने सभी विक्रेताओं को ईमानदारी से कार्य करने तथा हर विक्रेता के यहां पर दो-दो नैनो के प्रदर्शन लगाने हेतु निर्देशित किया साथ ही ज्यादा से ज्यादा किसानों तक नैनो टेक्नोलॉजी को पहुंचाने का कार्य किया जावे ऐसा हमें प्रयास किया करना चाहिए। उप संचालक कृषि मनीष मिश्रा ने सभी समितियों से ज्यादा से ज्यादा नैनो डीएपी, नैनो यूरिया, सागरिका एवं सल्फर जैसे तत्वों का उपयोग करने के लिये कहा जिससे जमीन की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी और किसानों को अधिक उत्पादन भी प्राप्त होगा। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक जबलपुर के विपणन अधिकारी पंकज अटोलिया द्वारा सभी का आह्वान किया कि जिले की लगभग 24 समितियां ही अभी गैर अनुदानित उर्वरकों का व्यवसाय कर रहे हैं अन्य समितियां भी उक्त व्यवसाय को शीघ्र प्रारंभ करें जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो। उत्कृष्ट कार्य करने वाले शाखा प्रबंधकों एवं समिति प्रबंधकों का पुरस्कार वितरित किये गये।

**Largest & Most Successful International Agriculture, Dairy & Horticulture Technology Exhibition of Madhya Pradesh**

**BOOK YOUR STALL NOW**

**India Farm-Tech**  
AN EXHIBITION ON FARMING TECHNOLOGY

**08 | 09 | 10 NOVEMBER 2025**  
LABHGANGA EXHIBITION CENTER  
INDORE, MADHYA PRADESH

**Our Milestones**

Event Organized	90	Exhibitors	6500	Exhibition Organizing Expertise	5+ Countries	Industry Cluster	10
-----------------	----	------------	------	---------------------------------	--------------	------------------	----

Organizers: Radeecal, Colossal

Supported By: INBIA, etc.

+91 99740 29797  
+91 90819 20200

agri@farmtechindia.in | www.farmtechindia.in

● डॉ. गीता सिंह, वैज्ञानिक  
कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डौरी (म.प्र.)  
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,  
जबलपुर (म.प्र.)

**श्री** अन्न ज्वार तथा बाजरा जैसे मोटे अनाजों के अतिरिक्त अन्य लघुधान्य फसलें जैसे- कोदो, कुटकी, रागी, सांवा, चीना, कंगनी एवं बासारा फसलें हैं, जो भारत के अनेकों भागों में उगायी जाती है। ये खाद्यान्न फसलें विशेषकर उन भागों में उगाये जाते हैं, जहां भूमि दूसरे उच्च धान्यएम उगाने योग्य नहीं रहती है। ये शीघ्र तैयार होने वाली फसलें हैं और इन्हें प्रायः वर्षा ऋतु में उगाया जाता है।

# श्रीअन्न फसलों में अन्तर्वर्तीय फसलों का महत्व

साधारणतः ये फसलें गरीब आदिवासी कृषकों के वैकल्पिक खाद्यान्न की श्रेणी में आती हैं, क्योंकि अगस्त के अंतिम सप्ताह या सितम्बर में जब कोई खाद्य फसल तैयार नहीं होती तब 60 से 70 दिनों में पकने वाली कुटकी एवं चीना, कंगनी इसके बाद सांवा, कोदो व रागी पककर तैयार हो जाती है। कृषकों के पास मात्र हल्की जमीन ही हो, जिसमें अन्य किसी प्रकार की फसलें नहीं ली जा सकती हो उसमें वैकल्पिक रूप से लघुधान्य फसलों को लगाया जा सकता है। ऐसा देखा गया है कि लघुधान्य फसलों में पाये जाने वाले पौषक तत्वों एवं रोगों को मिटाने की असाधारण क्षमता के कारण इनका व्यापारिक स्तर पर वितरण शुरू हो गया है। व्यापारिक स्तर पर यह बहुत ही कम मूल्य की मानी जाने वाली फसलें हैं, परंतु फिर भी ऐच्छिक या वैकल्पिक खाद्यान्न है। इन फसलों में गेहूं एवं चावल जैसे अनाज वाली फसलों की तुलना में सूखा सहने करने कि अदभुत क्षमता है। ये केवल जंगलों में या जंगल के किनारे व कंकरीली पत्थरीली एवं भर्रा क्षेत्रों रहने वाले आदिवासी कृषकों का एक मुख्य आहार के रूप में ही रहा है।

मध्यप्रदेश में अधिकांशतः लघु धान्य फसल उगाने वाले जिले जैसे कि डिण्डौरी, मण्डला, अनूपपुर, उमरिया, शहडोल, छिदवाड़ा, बैतूल, झाबुआ एवं खण्डवा आते हैं। मध्यप्रदेश के इन जिलों में लघुधान्य फसलें मुख्यतः कंकरीली-पत्थरीली पहाड़ियों ढलानों एवं कम उर्वरा शक्ति वाली भूमि में की जाती हैं। इनको उगाने वाले सभी क्षेत्रों के आदिवासी कृषकों की वर्तमान आर्थिक स्थिति बेहत कमजोर है। साथ ही उनके पास जोत का रकबा भी सीमित है, किंतु अपने स्वास्थ्य जीवनयापन करने के लिये दलहन, तिलहन व अन्य फसलों से होने वाले अनाजों की आवश्यकता पड़ती है। इसी को देखते हुए परम्परागत तरीके से कृषकों द्वारा मिश्रित खेती की जाती रही है, किंतु इन क्षेत्रों अन्य जिलों की तुलना में खासकर डिण्डौरी, उमरिया, अनूपपुर एवं मण्डला जिले में ठंड के दिनों में तापक्रम अत्यधिक कम हो जाने के कारण मुख्य दलहन फसलों में पाला लगने की संभावना बनी रहती है। इन क्षेत्रों रबी में बोवाई क्षेत्र काफी कम होता है। अतः रबी में लगने वाली दलहन फसलों की खेती बहुत कम रकबे में हो पाती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने व दलहन एवं तिलहन फसलों के उपयोग हेतु उन्हें खरीफ में लगाने वाली फसलों पर निर्भर रहना

पड़ता है। इन्हीं कारणों से परम्परागत रूप से कोदो-कुटकी के साथ कुटकी के साथ में अरहर, लोबिया, ग्वार, उड़द जैसी दलहन फसलो की मिश्रित खेती करते चले आ रहे हैं।

### एकल एवं मिश्रित खेती

मुख्य फसल के साथ ही साथ जो अन्य उसी समय की फसल लगाई जाती है, उससे कृषकों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है, साथ ही जब मुख्य फसल खराब हो जाती है, तब साथ में लगी मिश्रित फसल या अतिरिक्त फसल बचाकर लाभ लिया जा सकता है। बहुधा यह देखा गया है कि आदिवासी क्षेत्रों के कृषक कोदो एवं कुटकी के बीज के साथ ज्वार, अरहर, तिल, उड़द, लोबिया, ग्वार एवं रागी के बीज मिलाकर छिटकवा विधि द्वारा बोनी करते हैं। समय की बचत के हिसाब से यह मिश्रित पद्धति तो ठीक है लेकिन अन्तर्स्यन क्रियायें एवं कटाई के समय में कृषकों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है साथ ही उपज में भी अन्तर आता है।

- कोदो + अरहर
- कोदो + अमटा (खटुआ)
- कोदो + तिल
- कोदो + लोबिया
- कोदो + मूंग/उड़द

### कोदो एवं अमटा (खटुआ) की मिश्रित खेती

जैसे कि विदित है कोदो अनाज की खपत कुटकी फसल की तुलना में कहीं अधिक कम है एवं यही कारण है कि देश में कोदो फसल का रकबा या क्षेत्रफल धीरे-धीरे अन्य लघु धान्य फसलों (कुटकी) की तुलना में कम होता जा रहा है, जो कि एक चिंता का विषय है। चूंकि कोदो फसल एवं इसके अनाज में पाये जाने वाली सभी पौषक तत्व स्वास्थ्य की दृष्टि से सभी वर्ग के लिए लोगों के लिए सर्वोत्तम है फिर भी यह अनाज उपेक्षित है। जिनका सबसे बड़ा कारण इस अनाज में मतौना विष का पाया जाना हो सकता है, इस कारण इसकी मांग घटती चली जा रही है और व्यापारी इस अनाज का पूरा मूल्य छोटे किसानों को नहीं देते हैं। यही वजह है कि कोदो उगाने वाले कृषकों की संख्या में कमी आ गई है जो कि एक चिंता का विषय है। विभिन्न कोदो फसल अनुसंधानों एवं शोध कार्यों से ज्ञात हुआ है कि कोदो उगाने वाले कृषक प्रायः कोदो की कटाई

के समय सावधानियां नहीं बरतते हैं एवं भण्डारण के समय विभिन्न प्रकार की गलती भी करते हैं जिसकी वजह से ही मतौना विष का उद्भाव कोदो में हो जाता है। कटाई उपरांत कोदो की फसल एवं भूमि में अर्द्रता की अधिकता होने के कारण विभिन्न फफूंद उत्पन्न होने लगते हैं। कोदो में शोध कार्यों से ज्ञात हुआ है कि अमटा या खटुआ फसल कोदो के साथ मिश्रित या अन्तर्वर्तीय फसल के रूप लेने से मतौना विष का प्रभाव कोदो अनाज से कम या नष्ट किया जा सकता है। अमटा या खटुआ

के जड़ों से निकले वाले फायटो केमिकल्स एवं एलिलो केमिकल्स कोदो फसल वाली भूमि में विभिन्न विसाक्त प्रभाव से उत्पन्न फफूंदों एवं बैक्टेरियों की वृद्धि रोक देते हैं। जिसके कारण से ही मतौना दोष कोदो अनाज पर हावी नहीं हो पाते हैं एवं कोदो मतौना विष से लगभग बच जाती है। कोदो उगाने वाले गांव एवं कृषकों का सर्वे किये जाने पर मतौना के अन्तर्गत यह तथ्य सामने आया है कि यदि किसी मनुष्य या जानवर पर मतौना विष पर प्रभाव हुआ है, (शेष पृष्ठ 16 पर)

**IFFCO** **खेती का उत्पादन** **IFFCO**

बढ़ाकर कृषकों को समृद्ध करने के लिए

**इफको नैनो उर्ध्वकों की वृहद श्रृंखला**

**इफको का है पादा, लागत कम उत्पादन ज्यादा**

1 लि.ली. नैनो जिंक प्रति लीटर पानी के अनुमान में घोल बनाकर 30-35 दिन की फसल अवस्था में पतियों पर छिड़काव करें।

**नैनो यूरिया** नैनो डीएपी की सहाय पर प्रति बीघड

**₹. 10000/-** का आकर्षक **दुर्घटना बीमा मुफ्त**

4 लि.ली. नैनो यूरिया प्रति लीटर पानी में घोलकर प्रति बिघडकाव 500 लि.ली. मात्रा का दो बार, 35-40 दिन एवं 55-60 दिन पर छिड़काव करें।

1 लि.ली. नैनो कॉपर प्रति लीटर पानी के अनुमान में घोल बनाकर 30-35 दिन की फसल अवस्था में पतियों पर छिड़काव करें।

**नैनो यूरिया** नैनो डीएपी का उपयोग करने से **पारंपरिक उर्ध्वकों में 50 प्रतिशत की कटौती की जा सकती है**

नैनो डीएपी का प्रयोग बीज उपचार में 5 लि.ली. प्रति किलो बीज एवं कट्ट उपचार में 5 लि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर करें। इसके पश्चात खड़ी फसल में 35-40 दिन में 4 लि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर पतियों पर छिड़काव करें।

**इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड, मध्यप्रदेश**

## एक जिला एक औषधि उत्पाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

रीवा। देवारण्य योजना के अंतर्गत एक जिला एक औषधि उत्पाद (हरिद्रा) प्रशिक्षण कार्यक्रम जिला आयुष अधिकारी डॉ. शारदा मिश्रा के निर्देशन में विकासखंड रीवा अंतर्गत ग्राम पंचायत खोखम में आयोजित किया गया। जिसमें उद्यानिकी विभाग से मास्टर ट्रेनर डा. वंदना द्विवेदी और देवेन्द्र त्रिपाठी उपस्थित रहे। एवं डॉ. पंकज मिश्रा ने प्रशिक्षण में सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में 30 कृषकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। उक्त कार्यक्रम में सभी कृषकों को एक जिला



एक औषधि उत्पाद योजना के तहत हल्दी की कृषि तकनीकी, संग्रहण, भंडारण, प्राथमिक संस्करण तथा विपणन आदि विषयों पर विस्तार से प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

## प्राकृतिक खेती की तकनीक का प्रचार-प्रसार

डिंडोरी। विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत जिले के विकासखंड मेंहदवानी में ग्राम पंचायत कनेरी, मनेरी, सारंगपुर में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र डिंडोरी से वैज्ञानिक डॉ. रेणु पाठक द्वारा बताया गया कि प्राकृतिक खेती से फसलों की लागत कम करने के साथ ही गुणवत्ता युक्त उत्पाद प्राप्त करने के लिए सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। ऐसे में अधिक से अधिक किसानों को प्राकृतिक खेती के महत्व व प्राकृतिक खेती के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके अंतर्गत बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत, अग्निशस्त्र, दसपर्णी अर्क के बारे में बताया गया। ए.एस. उईके परियोजना संचालक आत्मा ने सरकारी योजनाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी दी।



कार्यक्रम में कृषि विभाग, उद्यानिकी विभाग, पशुपालन विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में विभागों ने भी जानकारी साझा की एवं कृषकों का फीडबैक लिया गया। कार्यक्रम में कृषि विभाग से आशीष अमलीयार, निखिलेश चौहान, प्रद्युम्न मोरे कृषि विस्तार अधिकारी, उद्यानिकी विभाग से विवेक मिश्रा के द्वारा फल, सब्जियों की खेती एवं प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई एवं अन्य जानकारी दी।

### (पृष्ठ 11 का शेष) खरीफ फसलों की उन्नतशील प्रजातियों...

#### सुगंधित धान की उन्नत किस्में

उपयुक्त किस्में	अनुशासित वर्ष	पकने का समय (दिन)	उपज क्षमता (क्विं./हे.)
पूसा-1847	2022	105-110	50-55
पूसा-1885	2022	125-130	55-60
पूसा-1886	2022	140-145	55-60
पूसा-1692	2020	105-110	50-55
पूसा-1718	2017	135-140	45-50
पूसा-1637	2016	125-130	50-55
पूसा-1728	2016	140-145	50-55
पूसा-1509	2013	105-110	45-50
पूसा सुगंधा-6 (पूसा-1401)	2008	145-150	50-55
पी.बी.-1460 उन्नत बासमती-1)	2007	135-140	55-60
पूसा सुगंधा-5 (पूसा-2511)	2005	120-125	55-60
पूसा सुगंधा-4 (पी.बी.-1121)	2003	140-145	40-45
पूसा सुगंधा-2	2001	120-125	50-55
पूसा सुगंधा-3	2001	120-125	55-60
पी.बी.-1 (पूसा बासमती-1)	1989	130-135	40-50

**पूसा-1637** : पूसा बासमती -1 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 125-130 दिन उपज- 50-55 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी।  
**पूसा-1847** : पूसा बासमती -1509 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 105-110 दिन अर्द्धबोनी एवं जल्दी पकने वाली प्रजाति। उपज- 50-55 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी।  
**पूसा-1885** : पूसा बासमती -1121 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 125-130 दिन उपज- 55-60 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी।  
**पूसा-1886** : पूसा बासमती -6 का सुधरा हुआ रूप। पकने की अवधि- 140-145 दिन उपज- 55-60 क्विंटल/हेक्टेयर ब्लास्ट एवं बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट रोग की प्रति प्रतिरोधी।

#### उड़द की उन्नत किस्में

उपयुक्त किस्में	अनुशासित वर्ष	पकने का समय (दिन)	उपज क्षमता (क्विं./हे.)
पी.यू.-31	2008	75-80	12-13
पी.यू.-40	2008	70-75	14-15
प्रताप उड़द-1	2012	70-75	13-15
आई.पी.यू.-11-02	2019	70-80	8-10
आई.पी.यू.-13-01	2020	70-80	9-10
आई.पी.यू.-10-26	2020	70-80	8-10

#### अरहर की उन्नत किस्में

उपयुक्त किस्में	अनुशासित वर्ष	पकने का समय (दिन)	उपज क्षमता (क्विं./हे.)
आई.पी.ए.-15-06	2021	140-145	21-25
जी.आर.जी.-152	2020	160-165	14-15
राजेश्वरी	2012	135-150	18-20
पूसा-16	2018	120	18-20

#### तिल की उन्नत किस्में

किस्में	फसल अवधि (दिन)	उत्पादन (क्विं./हे.)	विशेषताएं
टी.के.जे.-308	80-85	6-7	● जड़ सड़न अवरोधी।
जे.टी.-11	80-85	6-7	● ग्रीष्मकाल हेतु उपयुक्त।
टी.जे.एम.-8	80-85	6-7	● पर्ण अंगमारी रोग अवरोधी।
टी.के.जे.-55	75-80	6-7	● जड़ सड़न अवरोधी।

### (पृष्ठ 10 का शेष)

## सोयाबीन उत्पादन....

### उर्वरक एवं खाद

या जिप्सम 2-2.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपयोग करने से भी गंधक की कमी पूरी हो जाती है।

▶ सामान्यतः सोयाबीन में 20-30 कि.ग्रा. नत्रजन, 60-80 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 20-30 कि.ग्रा. पोटाश तथा 20 कि.ग्रा. गंधक की मात्रा आवश्यक रूप से उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

### बुवाई का तरीका

- ▶ सोयाबीन की बुवाई करते समय कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. होना चाहिए।
- ▶ कम ऊंचाई वाली जातियों या कम फैलने वाली जातियों को 30 से.मी. की कतार से कतार की दूरी पर बोना चाहिए।
- ▶ पौधे से पौधे की दूरी 5-7 से. मी. रखना चाहिए।
- ▶ बुवाई का कार्य मेढ़-नाली विधि एवं चौड़ी पट्टी-नाली विधि से करने से सोयाबीन की पैदावार में वृद्धि पायी गयी है एवं नमी संरक्षण तथा जल निकास में भी यह विधियां अत्यंत प्रभावी पायी गयी हैं।
- ▶ विपरीत परिस्थितियों में बुवाई दुफन, तिफन या सीड ड्रिल से कर सकते हैं।
- ▶ बुवाई के समय जमीन में उचित नमी आवश्यक है।
- ▶ बीज जमीन में 2.5 से 3 से.मी. गहराई पर पड़ने चाहिए।

### अंकुरण के बाद फसल की सुरक्षा

बुवाई के तीसरे दिन से एक सप्ताह तक अंकुरित नवजात पौधों को पक्षियों से बचाना बहुत आवश्यक है।

### जल प्रबंध

- ▶ सामान्य तरीके से बुवाई के बाद 20-20 मीटर की दूरी पर ढाल के अनुरूप जल निकास नालियां अवश्य बनायें, जिससे अधिक वर्षा की स्थिति में जलभराव की स्थिति पैदा न हो एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई भी दी जा सके।
- ▶ यदि एक सप्ताह से ज्यादा वर्षा का अन्तराल हो जाये तो सिंचाई की सुविधा

होने पर हल्की सिंचाई इन्हीं नालियों के माध्यम से करें। उचित जल प्रबंध से सोयाबीन की पैदावार में वृद्धि होती है।

### खरपतवार नियंत्रण

- ▶ 20-25 दिन एवं 40-45 दिन की फसल होने पर फसल से खरपतवार निकाल देना चाहिए। मजदूरों द्वारा हाथ से निंदाई करवाने के परिणाम अच्छे मिले हैं।
- ▶ परन्तु मजदूरों की कमी, वर्षा का अंतराल एवं जमीन की स्थिति से हाथ की निंदाई खरीफ मौसम में कभी-कभी कठिन हो जाती है। अतः यांत्रिक विधियों में सी.आई.ए.ई. भोपाल द्वारा निर्मित उन्नत हैन्ड हो या बैलों से चलने वाला कुल्पा या डोरा से भी निंदा नियंत्रण कर सकते हैं।
- ▶ आवश्यकतानुसार रासायनिक नीडानाशकों का उपयोग भी करना चाहिए।

### इन नीडानाशकों को चार समूहों में बांटा गया है-

#### बोनी से पूर्व (पी पी आई)

पेण्टीमिथलीन+इमेझेथापायर 2.5-3.00 लीटर प्रति हेक्टेयर। बोनी से पूर्व नम मिट्टी में छिड़ककर मिला कर दें।

#### बोनी तुरन्त बाद अंकुरण से पूर्व (पीई)

- ▶ डायक्लोसुलम 84 डब्ल्यू.डी.जी. 26 ग्रा. क्रियाशील अवयव प्रति हेक्टेयर।
- ▶ या पेन्डिमिथालिन 30 ई.सी. 3.25 लीटर प्रति हेक्टेयर।
- ▶ या पेन्डिमिथालिन 38.7 सी.एस. 1.5-1.75 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर।
- ▶ या सल्फेन्ट्राइज़ोन 48 एस.सी. 0.75 ली. प्रति हेक्टेयर।
- ▶ या क्लोमेज़ोन 50 ई.सी. 1 कि.ग्रा. क्रियाशील अवयव प्रति हेक्टेयर।
- ▶ या पायरोक्सासल्फान 85 डब्ल्यू.जी. 150 ग्रा. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से बोनी के बाद एवं अंकुरण के पूर्व छिड़काव करने से खरपतवार नियंत्रण सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

#### बोनी के 10-12 दिन बाद (पीओई)

- ▶ सोयाबीन की बोनी के 10-12 दिन के बीच खड़ी फसल में।
- ▶ क्लोरीम्यूरान इथाइल 25 डब्ल्यू.पी. 36 ग्रा. प्रति हेक्टेयर।
- ▶ या बेन्टाज़ोन 48 एस.एल. 2 लीटर/हेक्टे.।



● डॉ. राजाराम त्रिपाठी

राष्ट्रीय संयोजक- अखिल भारतीय किसान महासंघ,  
कृषि मामलों के विशेषज्ञ, पर्यावरण योद्धा व ग्रामीण  
अर्थनीति विचारक )

**हा** ल ही में नीति आयोग द्वारा प्रस्तुत एक वर्किंग पेपर ने देश के कृषि क्षेत्र में गहरी चिंता और असंतोष उत्पन्न किया है। इस पेपर में अमेरिका से कृषि उत्पादों पर आयात शुल्क घटाने, जेनेटिकली मोडिफाइड (जीएम) सोयाबीन व मक्का को भारत में लाने और भारत को इन उत्पादों के लिए एक संभावित आयातक बाजार के रूप में खोलने की सिफारिश की गई है।

यह प्रश्न अब राष्ट्रीय विमर्श का विषय बन चुका है कि क्या भारत अब केवल वैश्विक कृषि बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए एक विशाल उपभोक्ता मंडी बनकर रह जाएगा? और क्या हमारे नीति-निर्माता अब भारतीय किसानों के प्रतिनिधि नहीं, बल्कि वैश्विक खाद्य व्यापार लॉबी के परामर्शदाता बनते जा रहे हैं?

**भूख से त्रस्त देश को जीएम अनाज का बोझ?**

भारत अभी भी ग्लोबल हंगर इंडेक्स में 127वें स्थान पर है। करोड़ों लोगों को आज भी संतुलित पोषण उपलब्ध नहीं। ऐसे में अमेरिका से जीएम खाद्यान्न मंगाने की सिफारिश न केवल स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ है, बल्कि भारत को एक जेनेटिक डॉपिंग ग्राउंड में बदलने की मंशा भी उजागर करती है।

विज्ञान और जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में जीएम फसलों के दीर्घकालिक प्रभावों पर आज भी गंभीर प्रश्न चिह्न है। जैव विविधता, परागण प्रणाली, मृदा स्वास्थ्य और मानव जीवन पर इसके संभावित नकारात्मक परिणामों के बावजूद नीति आयोग द्वारा इस दीदादिलेरी के साथ जीएम खाद्य पदार्थों का पक्ष लिया जाना चिंताजनक है।

**तिलहन आत्मनिर्भरता की अनदेखी क्यों?**

नीति आयोग का यह सुझाव कि भारत को अमेरिकी सोयाबीन तेल का आयात आसान बनाना चाहिए, सीधे-सीधे देश के तिलहन किसानों की उपेक्षा है। देश में सरसों, मूंगफली, तिल, अलसी और सोयाबीन जैसे फसलों की अपार संभावनाएं होते हुए भी उनके उत्पादन, मूल्य समर्थन और विपणन पर कोई सार्थक चर्चा नहीं की गई। यदि अमेरिका से जीएम तेल सस्ता मिलता है, तो भारतीय किसान के उत्पादों की कीमत कौन देगा? क्या आत्मनिर्भर भारत केवल भाषणों में रहेगा और जमीनी नीति 'आयात आधारित भारत' की ओर बढेगी?

**क्या नीति आयोग अब 'व्यापार आयोग' बन रहा है?**

यह पेपर नीति आयोग के वरिष्ठ सदस्य डॉ. रमेश चंद एवं सलाहकार राका सक्सेना द्वारा तैयार किया गया है। यह वही समय है जब भारत-अमेरिका के बीच संभावित फ्री ट्रेड एग्रीमेंट की चर्चाएं जोरों पर हैं। क्या यह केवल संयोग है कि आयोग अब अमेरिका के कृषि हितों की 'सिफारिशें' कर रहा है?

यदि कृषि नीति वे लोग बनाएंगे जिन्होंने कभी खेत की मिट्टी नहीं छुई, न किसानों की लागत समझी, न ऋण का बोझ, तो फिर भारत की कृषि आत्मा का हनन निश्चित है।

**गन्ना किसानों को दरकिनार कर मक्का आयात?**

इथेनॉल उत्पादन हेतु अमेरिका से जीएम मक्का आयात करने का प्रस्ताव न केवल हास्यास्पद है, बल्कि देश के गन्ना किसानों का अपमान भी। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक जैसे राज्यों में लाखों गन्ना किसान अभी भी चीनी मिलों से बकाया भुगतान के लिए संघर्षरत हैं। ऐसे में देशी स्रोतों से इथेनॉल उत्पादन बढ़ाने के बजाय विदेशी मक्का का विकल्प सुझाना, देश की कृषि आत्मनिर्भरता को खोखला करना है।



# क्या भारत विदेशी कृषि उत्पादों का बाजार बनने को अभिशप्त है?

**आयात पोषित महंगाई और खाद्य असुरक्षा की भूमिका?**

नीति आयोग का यह भी सुझाव है कि अमेरिका से बादाम, पिस्ता, सेब और अखरोट जैसे उत्पादों पर आयात शुल्क कम किया जाए। प्रश्न यह है कि भारत में महंगाई चरम पर है। मध्यवर्गीय और निम्न आय वर्ग पहले से ही रसोई की कीमतों से जूझ रहा है। ऐसे में विदेशी 'लक्जरी खाद्य पदार्थों' के लिए बाजार खोलना किसकी प्राथमिकता है?

**क्या अब नीतियां व्हाइट हाउस से बनेंगी?**

यह विडंबना है कि जिन नीतियों को भारत के किसानों के लिए बनना चाहिए, वे आज अमेरिका के व्यापारिक एजेंडे से प्रेरित प्रतीत होती हैं। क्या देश की कृषि नीति अब वाशिंगटन के लॉबियों से निर्देशित होगी? क्या हम 'भारत के किसानों' को छोड़कर 'अमेरिकी किसानों' के हितों के रक्षक बनते जा रहे हैं?

**भारतीय कृषि और किसानों की शक्ति को पहचानिए**

भारत की कृषि अर्थव्यवस्था में अभी भी आत्मनिर्भरता की प्रबल संभावनाएं हैं। देश में ऑर्गेनिक खेती, पारंपरिक बीज, जैविक खाद, मिलेट्स, औषधीय वनस्पतियां और छोटे किसान आधारित कृषि मॉडल आज भी टिकाऊ, सुरक्षित और बाजारोन्मुख समाधान प्रस्तुत करते हैं।

**हमारी आवश्यकता है**

▶ उत्पादन बढ़ाने की नहीं, उत्पाद की कीमत सुनिश्चित करने की।

तकनीकी ज्ञान की नहीं, व्यापारिक न्याय की।

**कृषिर्वाणिज्य धर्मश्च राष्ट्रस्य मूलं स्मृतम्।**

(कृषि, व्यापार और धर्म- राष्ट्र की त्रयी नींव हैं)

**किसानों के नाम पर अब दलाली स्वीकार्य नहीं**

कृषि नीति में विदेशी कंपनियों के इशारों पर फैसले लेना, नीति नहीं 'दलाली' की संस्कृति को जन्म देना है। क्या आज का भारत, जिसकी कृषि परंपरा हजारों वर्षों से विश्व की प्रेरणा रही है, वह अपनी नीति अमेरिका के खाद्य लॉबी के हवाले कर देगा? यदि ऐसा हुआ, तो यह केवल कृषि पर हमला नहीं, भारत की आत्मा पर आघात होगा। याद रखियेगा अब किसान पूछेगा, किसके लिए ये नीतियां बन रही हैं?

**आज भारत का किसान प्रश्न करता है कि**

- ▶ क्या नीति आयोग हमारी बात सुनेगा या वॉल स्ट्रीट की लॉबी की?
- ▶ क्या हम अपने खेतों में अपनी फसल नहीं उगाएंगे?
- ▶ क्या हमारी थाली पर अब विदेशी व्यापारिक कंपनियों का अधिकार होगा?

**यत्र अन्नं तत्र लक्ष्मी :- जहाँ अन्न है, वहीं समृद्धि है।**

लेकिन यदि हम अपने अन्नदाता की उपेक्षा कर, विदेश से अन्न मंगाकर उसे खिलाएंगे तो न अन्न बचेगा, न आत्मा, न आत्मनिर्भरता।





**सहकार से समृद्धि**

**कृमको उत्पाद की पहचान, भरपुर फसल खुशहाल किसान**




**कृषक भारती को-ऑपरेटिव लिमिटेड, म.प्र.**

## किसानों के बीच लोकप्रिय विश्वकर्मा एगो इण्डस्ट्रीज

( उमाशंकर तिवारी )

बरेली। विश्वकर्मा एगो इण्डस्ट्रीज किसानों के लिये कोई नया नाम नहीं है। रायसेन जिले के बरेली स्थित विश्वकर्मा एगो इण्डस्ट्रीज के संचालक प्रेमनारायण विश्वकर्मा ने बताया कि वर्ष 1985 से लगातार किसानों की सेवा में समर्पित हैं। रायसेन जिले के अलावा भोपाल, होशंगाबाद से लगे हुए अन्य जिलों में भी किसानों द्वारा कृषि उपकरण खरीदा जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस संस्थान को चलाने में मेरे बेटे रोहित विश्वकर्मा का काफी सहयोग है। इस संस्थान द्वारा थ्रेसर, सीडड्रिल, फ्रंटडोजर, ट्राली, रीपर, वाटर पम्प, पानी टैंकर, लेवलर, अल्टीनेर, तोता प्लाऊ, बलराम हल, पोस्ट होल डिगर के अलावा किसानों से संबंधित सभी प्रकार का कृषि उपकरण समय



प्रेमनारायण विश्वकर्मा



रोहित विश्वकर्मा

पर उपलब्ध कराया जाता है। सरल स्वभाव के धनी श्री प्रेमनारायण विश्वकर्मा ने बताया कि कृषि यंत्रों में गुणवत्ता के साथ कोई समझौता नहीं करते। श्री विश्वकर्मा द्वारा समय-समय पर किसानों से सीधा संवाद कर उच्च गुणवत्ता के कृषि यंत्र उपलब्ध कराते हैं। यह संस्थान बरेली उदयपुरा रोड पर स्थित है। श्री रोहित विश्वकर्मा ने बताया कि इस संस्थान द्वारा विजय सिडड्रिल, विनय सिड्रिल, बुलडोर रोटकिंग, रोटबेटर के अलावा हरनाम श्रेशर के डीलरशिप भी है। उन्होंने बताया कि कृषि उपकरण जो भी बनाये जाते हैं अच्छे कारीगरों के माध्यम से एवं अच्छे लोहे का उपयोग किया जाता है। डीलरशिप हेतु विश्वकर्मा एगो इण्डस्ट्रीज बरेली जिला रायसेन के मो. 9425681117 पर संपर्क कर सकते हैं।

## तकनीकों से बनेगा खेती लाभ का धंधा: श्री टेटवाल

विकसित कृषि संकल्प अभियान यात्रा में किसान हुये शामिल

राजगढ़। जिले के सारंगपुर विकासखंड के ग्राम बाबडलया में विकसित कृषि संकल्प अभियान यात्रा में कौशल विकास एवं रोजगार राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार गौतम टेटवाल ने कहा है कि यह केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि एक ऐसा संकल्प है जिसके माध्यम से हम खेत तक तकनीक, प्रशिक्षण और समर्थन पहुंचाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि जब तक किसान सशक्त नहीं होगा, तब तक देश की प्रगति अधूरी है। सरकार की यह प्राथमिकता है कि आधुनिक तकनीक और योजनाओं की जानकारी सीधे गांव और खेत तक पहुंचे। श्री टेटवाल ने कहा कि



खेती को लाभकारी बनाने के लिए नवाचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तकनीकी हस्तक्षेप समय की मांग है। उन्होंने कहा कि यह अभियान न केवल खेती को आधुनिक बनाएगा, बल्कि इसे व्यवसाय का रूप देने में भी सहायक सिद्ध होगा। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे वैज्ञानिक तरीकों को अपनाएं और पारंपरिक अनुभव के साथ नए प्रयोगों को जोड़कर अपनी उपज और आमदनी दोनों बढ़ाएं। कार्यक्रम में ड्रोन तकनीक का प्रदर्शन किसानों के लिए खास आकर्षण का केंद्र रहा। विशेषज्ञों ने बताया कि ड्रोन से कीटनाशकों का छिड़काव तेज, सटीक और कम लागत वाला होता है। इससे समय

**करेली में**

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

**श्री कैलाश पटेल**  
मे. कैलाश ट्रेडर्स

मुक्तिधाम के सामने, करेली जिला - नरसिंहपुर (म.प्र.)

( पृष्ठ 13 का शेष )

श्री अन्न फसलों....

ऐसे मनुष्य या जानवर को अमटा या खटुआ का सेवन कराना चाहिए। अमटा के फूल एवं पत्तियों से बनायी गई सब्जी या पेय पदार्थ के सेवन से मतौना विष के प्रभाव को जल्द से जल्द नगण्य किया जा सकता है।

**अन्तर्वर्तीय खेती**

**रागी एवं लोबिया अन्तर्वर्तीय फसल पद्धति**

कृषि शोध कार्यों एवं अनुसंधान परिणामों से यह प्रदर्शित हुआ है कि मिश्रित खेती एवं एकल फसल की तुलना में अन्तर्वर्तीय फसलों द्वारा अधिक लाभ प्राप्त होता है।

अन्तर्वर्तीय फसलों के चयन व अनुपात ज्ञात करने हेतु अनुसंधान शोध कार्यों से ज्ञात हुआ है कि यदि कोदो व कुटकी के साथ 4:2 में अरहर की फसल लगाई जाये तो उपज में सर्वाधिक लाभ प्राप्त होता है, जो कि शुद्ध फसल की तुलना में लगभग 20 से 23 प्रतिशत अधिक लाभ प्रदान करता है। अतः आदिवासी अंचलों के कृषकों को सलाह दी जाती है कि कोदो, कुटकी एवं अन्य लघुधान्य फसलों को शुद्ध फसल के रूप में न लेकर इनकी स्थान पर उपरोक्त

अनुपात (4:2) में अरहर की फसल अन्तर्वर्तीय खेती के रूप में की जानी चाहिए।

**कोदो के साथ ली जाने वाली प्रचलित अन्तर्वर्तीय फसलें**

- कोदो + अरहर (4:2)
- कोदो + तिल (4:2)
- कोदो + मूंग/उड़द (4:1/4:2)
- कोदो + लोबिया (4:2)
- कोदो + ग्वार (4:2)

इस प्रकार कोदो कुटकी एवं रागी के साथ अन्य अन्तर्वर्तीय फसलें बोकुर अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

**कुटकी के साथ ली जाने वाली प्रचलित अन्तर्वर्तीय फसलें**

- कुटकी + अरहर (4:1)
- कुटकी + तिल (4:2)
- कुटकी + मूंग/उड़द (4:1/4:2)
- कुटकी + लोबिया (4:2)
- कुटकी + ग्वार (4:2)

**अन्तर्वर्तीय फसलों के लाभ**

- अन्तर्वर्तीय फसल पद्धति से मुख्य फसल की पूर्ण पैदावार एवं अन्तर्वर्तीय फसल अतिरिक्त पैदावार प्राप्त होती है।
- लघुधान्य फसलों में दलहनी फसलों को अन्तर्वर्तीय फसल के रूप में

लिये जाने के कारण उर्वता क्षमता बढ़ती है, जिसके कारण उत्पादन में वृद्धि होती है।

- दलहनी फसलों के उपयोग से भूमि की जल अवशोषण क्षमता में इजाफा देखा गया है।
- अन्तर्वर्तीय फसलों के कारण नींदा या खरपतवारों की संख्या में कमी आंकी गई है। जिससे खेत में संतुलित पौध संख्या रहती है। जो कि अधिक उत्पादन में एक वृद्धि कारक है।
- लघु धान्य फसलों में दलहनी फसलों के उपयोग से मृदा की वायु धारण क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है जिसके कारण लघुधान्य फसलों के जड़े मजबूती से पौधों को सहारा देती है एवं इन्हीं कारणों से लौडिजिंग प्रतिशत में कमी आंकी गई है।
- अन्य अन्तर्वर्तीय फसलें जैसे दलहनी एवं तिलहनी के उपयोग के कारण लघुधान्य फसलों के अनाजों में पाई जाने वाले पौषक तत्वों में बढ़ोत्तरी होती है। साथ ही साथ स्वाद में भी वृद्धि होती है।
- अन्तर्वर्तीय फसलें के उपयोग से लघुधान्य फसलों में कीट एवं व्याधियों में भी गिरावट आती है।

## वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-



एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)  
फोन : ( 0755 ) 4233824  
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

**बुझार में**



कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

**रामलाल कुशवाहा**

मे. कुशवाहा बीज भंडार स्टेशन के पास, बुझार जिला-शहडोल (म.प्र.)  
मो. 9424339752



**मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स**

( कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान )

- औषधीय ● वन ● सब्जी ● फूल ● बीज ● स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ● कीटनाशक ● जैविक खाद ● गार्डन टूल ● जैविक उत्पाद ● ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
- वितरक - ● निर्मल सीड्स, जलगांव ● कलश सीड्स, जालाना ● अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ● दिनाकर सीड्स, गुजरात ● सर्टिड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ● स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ● जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ● स्काई बर्ड एगो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ● अनु प्रोडक्ट्स लि. ● श्री सिद्धि एगो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)  
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

## संचालक कृषि से राजेश मलैया ने की मुलाकात



किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के संचालक श्री अजय गुप्ता के सागर प्रवास के दौरान मलैया एग्रीटेक सागर के संचालक श्री राजेश मलैया ने मुलाकात कर स्वागत किया। इस अवसर पर श्री अनुराग जैन भी उपस्थित थे।

## भूमि को समृद्ध करना किसान और हमारी जिम्मेदारी: श्रीमती पारधी

सिवनी। भारत सरकार के 15 दिवसीय विकसित कृषि संकल्प अभियान 2025 के समापन समारोह का आयोजन किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग सिवनी एवं कृषि विज्ञान केंद्र के संयुक्त तत्वाधान में केवीके के प्रांगण में आयोजित किया गया। समापन कार्यक्रम की मुख्य अतिथि बालाघाट सिवनी संसदीय क्षेत्र की सांसद श्रीमती भारती पारधी, विशिष्ट अतिथि के रूप में सिवनी विधानसभा क्षेत्र के विधायक दिनेश राय मुनमुन एवं सिवनी जिले की अध्यक्ष भाजपा मीना बिसेन, पूर्व सांसद डॉ. ढाल सिंह बिसेन, राकेश बैस, शेर सिंह उइके, उप संचालक कृषि सुधीर धुर्वे एवं कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. शेखर सिंह बघेल मंचासीन रहे।

कार्यक्रम में श्रीमती पारधी ने कहा कि आपकी सरकार-आपके द्वार, वैज्ञानिक, कृषि अधिकारियों को पहुंचा रही है ताकि आपकी कृषि से संबंधित समस्याओं का समाधान त्वरित हो सके और खेती लाभ का धंधा बन सके। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी लगातार मोटे



अनाज को खेती एवं उपयोग को बढ़ावा दे रहे हैं क्योंकि मोटे अनाज हमारे शरीर को शक्ति ऊर्जा एवं पौष्टिकता प्रदान करते हैं।

समापन अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र प्रांगण में विभिन्न विभागों की प्रदर्शनी एवं मेला का आयोजन किया गया। इस दौरान नवीन तकनीक की जानकारी, कृषि वैज्ञानिकों द्वारा खरीफ की फसलों की जानकारी, नरवाई प्रबंधन, पशुपालन विभाग की विभिन्न योजनाएं, उद्यानकी योजनाओं की जानकारी के साथ ही इफको के द्वारा ड्रोन का व्यावहारिक प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में सिवनी जिले एवं अन्य विकासखंड के लगभग

500 किसानों की भागीदारी रही। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. शेखर सिंह बघेल ने 15 दिवसीय इस महत्वपूर्ण अभियान की विस्तार से जानकारी एवं कृषि वैज्ञानिक एवं कृषि विभाग के अधिकारियों के दलों द्वारा किए गए कृषि संवाद एवं कृषकों की समस्याओं की समाधान विषय पर विस्तार से जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि सिवनी जिले में आठ विकासखंडों में तीन वैज्ञानिक दल द्वारा 135 ग्राम पंचायत में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 25000 से अधिक किसानों से कृषि वैज्ञानिकों का सीधा संवाद स्थापित किया गया।

# कृषि विभाग के चार दर्जन सहायक संचालक स्थानांतरित

भोपाल। राज्य शासन ने किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के 48 सहायक संचालक के स्थानांतरण किये हैं। कुछ सहायक संचालकों को उप संचालक कृषि एवं परियोजना संचालक आत्मा का प्रभार भी दिया है। स्थानांतरित सहायक संचालक निम्नानुसार हैं।

नितेश कुमार यादव, सहायक संचालक-कार्यालय बीज गुण नियंत्रण प्रयोगशाला इंदौर से कार्यालय उप संचालक, कृषि विकास, जिला खण्डवा, रविकांत सिंह- कार्यालय उप संचालक, कृषि सिंगरौली से कार्यालय उप संचालक, कृषि नर्मदापुरम, अश्विनी झारिया- कार्यालय संयुक्त संचालक, कृषि जबलपुर से प्रभारी उप संचालक, कृषि मंडला, शैलेन्द्र सिंह घुरैया- कार्यालय उप संचालक, कृषि शिवपुरी से कार्यालय उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला, ग्वालियर, भानूप्रकाश शर्मा- कार्यालय उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला ग्वालियर से कार्यालय उप संचालक, कृषि भिण्ड कपिल बेडा- कार्यालय उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला उज्जैन से कार्यालय उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला इंदौर, संजय यादव- कार्यालय उप संचालक, कृषि हरदा से कार्यालय उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला, उज्जैन, उर्मिला धुर्वे- कार्यालय उप संचालक कृषि धार से कार्यालय उप संचालक, कृषि कटनी, पप्पु कटारा- कार्यालय उप संचालक, कृषि मंदसौर से कार्यालय उप संचालक, कृषि रतलाम, बी.एल. गरवाल- कार्यालय अनुविभागीय कृषि अधिकारी, जिला मंदसौर से कार्यालय संयुक्त संचालक, कृषि मुरैना, खेरसिंह कैन- कार्यालय उप संचालक, कृषि

अशोकनगर से प्रभारी परियोजना संचालक आत्मा समिति, जिला उज्जैन, नरेश मीणा- कार्यालय उप संचालक, कृषि उज्जैन से कार्यालय उप संचालक, कृषि ग्वालियर, डॉ. सुरेश कुमार पटेल- कार्यालय उप संचालक, कृषि छतरपुर से कार्यालय उप संचालक, कृषि रीवा, सुरेन्द्र अमरूते- कार्यालय उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला भोपाल से कार्यालय उप संचालक, कृषि विदिशा, योगेन्द्र बेडा- संचालनालय कृषि विकास, भोपाल से कार्यालय उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला भोपाल, देवीसिंह वर्मा- कार्यालय प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, सिंगरौली से कार्यालय उप संचालक, कृषि इंदौर, गजानंद जाट- कार्यालय उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला इंदौर से कार्यालय उप संचालक, कृषि रतलाम, पानसिंह करोरिया- कार्यालय उप संचालक, कृषि श्योपुर से कार्यालय उप संचालक, कृषि शिवपुरी, सुनील कुमार सोने- कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा समिति, बालाघाट से कार्यालय उप संचालक, कृषि रायसेन, डी.एस. मौर्य- संचालनालय, कृषि विकास, भोपाल से कार्यालय उप संचालक, कृषि धार, अरविन्द कुमार वर्मा- कार्यालय उप संचालक, कृषि श्योपुर से कार्यालय उप संचालक, कृषि मंडला, बिन्दुलता बारेकर- कार्यालय प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, उज्जैन से संचालनालय, कृषि विकास, भोपाल, अमित सिंह- कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा समिति गुना से कार्यालय उप संचालक, कृषि अशोकनगर, सरनाम सिंह- कार्यालय प्राचार्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, औबेदुल्लागंज जिला रायसेन से

संचालनालय, कृषि विकास, भोपाल, अरूणिमा सेन, कार्यालय बीज परीक्षण प्रयोगशाला जबलपुर से कार्यालय उप संचालक, कृषि कटनी, अंजू कोडापे- कार्यालय उप संचालक, कृषि सिवनी से कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा समिति, मंडला, अर्चना डोंगरे- कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा समिति, बालाघाट से कार्यालय अनुविभागीय कृषि अधिकारी, सौंसर जिला छिन्दवाड़ा, भगवानसिंह- कार्यालय उप संचालक, कृषि नीमच से कार्यालय अनुविभागीय कृषि अधिकारी, जिला उज्जैन, राघवेन्द्र सिंह- संचालनालय, कृषि विकास भोपाल से कार्यालय संयुक्त संचालक, कृषि विकास नर्मदापुरम, शैलेन्द्र सिंह राठौर- कार्यालय बीज परीक्षण प्रयोगशाला, नर्मदापुरम से कार्यालय उप संचालक, कृषि नर्मदापुरम, अंजली बाजपेई- कार्यालय उप संचालक, कृषि डिण्डौरी से कार्यालय संयुक्त संचालक, कृषि जबलपुर, सचिन जैन- कार्यालय सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी, जिला छिन्दवाड़ा से कार्यालय उप संचालक, कृषि राजगढ़, खेलावन डेहरिया- कार्यालय सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी जिला उमरिया से कार्यालय उप संचालक, कृषि बालाघाट, अर्चना वासनिक नागदेवे- कार्यालय उप संचालक, कृषि रतलाम से कार्यालय अनुविभागीय कृषि अधिकारी, उपसंभाग लखनादौन जिला सिवनी, राजूसिंह सोलंकी- कार्यालय सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी जिला राजगढ़ से कार्यालय उप संचालक, कृषि अलीराजपुर, जितेन्द्र सिंह रावत- कार्यालय उप संचालक, कृषि बुरहानपुर से कार्यालय उप संचालक, कृषि

खंडवा, दीपक मंडलोई- कार्यालय उप संचालक, कृषि बुरहानपुर से कार्यालय उप संचालक, कृषि खंडवा, दिनेश श्रीवास्तव- कार्यालय उप संचालक, कृषि गुना से कार्यालय संयुक्त संचालक, कृषि ग्वालियर, मोरिस नाथ- कार्यालय उप संचालक, कृषि सिवनी से कार्यालय उप संचालक, कृषि नरसिंहपुर, उमेश कुमार कटहरे- कार्यालय उप संचालक, कृषि नरसिंहपुर से कार्यालय संयुक्त संचालक कृषि जबलपुर, कविता गवली- कार्यालय सहायक मिट्टी परीक्षण अधिकारी, जिला खंडवा से कार्यालय उप संचालक, कृषि बुरहानपुर, रचना शर्मा- कार्यालय उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला आधारताल जबलपुर से कार्यालय उप संचालक, कृषि जबलपुर, करण सिंह अलावा- कार्यालय प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र इंदौर से कार्यालय उप संचालक, कृषि गुना।

ग्यारसीलाल अहिरवार- कार्यालय उप संचालक, कृषि पन्ना से कार्यालय उप संचालक, कृषि दमोह, डॉ. विमलेश कुमार यादव- कार्यालय प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, औबेदुल्लागंज जिला रायसेन से कार्यालय उप संचालक, कृषि दतिया, डॉ. प्रेमसिंह- कार्यालय प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, औबेदुल्लागंज जिला रायसेन से कार्यालय म.प्र. राज्य जैविक प्रमाणीकरण संस्था, भोपाल, गजराज सिंह गोरख- कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा समिति दतिया से कार्यालय उप संचालक, कृषि भिण्ड एवं फूलसिंह मालवीय- संचालनालय, कृषि विकास भोपाल से प्रभारी उप संचालक, कृषि जिला बालाघाट।

# किसानों का चहेता ACE ट्रैक्टर

मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ के किसानों का सर्वगुण सम्पन्न ACE ट्रैक्टर

(राजेन्द्र राजपूत) भोपाल। एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड ACE ट्रैक्टर किसानों का चहेता ट्रैक्टर साबित हो रहा है। यह ट्रैक्टर खेती के सभी कार्यों के अलावा ढुलाई का भी सबसे बड़ा आल राउंडर है। ACE ट्रैक्टर के जोनल हेड (एम.पी.-छ.ग.) श्री मनोज गर्ग ने बताया कि ACE ट्रैक्टर का निर्माण किसानों की स्थानीय आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया गया है। ACE ट्रैक्टर 15 हार्सपावर से 90 हार्सपावर श्रेणी के विभिन्न मॉडल्स कई वेरियन्ट्स में उपलब्ध हैं।

श्री गर्ग ने बताया कि मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के किसानों द्वारा ACE ट्रैक्टर बेहद पसंद किया जा रहा है। ACE ट्रैक्टर पूर्णतः स्वदेशी एवं सर्वगुण सम्पन्न है।

जिसमें सारे अत्याधुनिक फीचर्स उपलब्ध हैं। इस ट्रैक्टर की प्रमुख विशेषता दमदार पावर स्टेयरिंग का विकल्प भी उपलब्ध है। इनमें प्रमुख रूप से



श्री मनोज गर्ग  
जोनल हेड (MPCG)



कांस्टेंट मेश गियर, डुअल क्लच तेल में डुबे ब्रेक, एडवांस हाइड्रोलिक, साइड शिफ्टिंग गियर जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। श्री गर्ग ने बताया कि हमारी कंपनी ने बड़ी जोत

वाले किसानों एवं व्यावसायिक कार्यों के लिए चेतक डीआई 65.50 हार्स पावर का ट्रैक्टर उपलब्ध करवाया है जिसमें सभी आवश्यक अत्याधुनिक फीचर्स मौजूद हैं।

इस ट्रैक्टर का लिफ्ट दो हजार किलोग्राम का है जो भारी से भारी कार्य करने में सक्षम है। इसके आगे के टायर 7.5316 एवं पीछे के टायर 14.9328 साइज के हैं। इसमें शानदार

4088 सीसी का दमदार इंजन लगाया गया है। पावर स्टेयरिंग होने से इसका परिचालन अत्यधिक सुगम है। श्री गर्ग ने बताया कि मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ में चेतक की मांग ज्यादा बढ़ी है। ACE ट्रैक्टर की कार्य क्षमता को देखकर किसान इसे ज्यादा पसंद कर रहे हैं। यह ट्रैक्टर सारे कार्य बड़ी कुशलता पूर्वक करता है।

यहां के किसानों के लिए ACE ट्रैक्टर वरदान साबित हो रहा है। ACE के जोनल हेड श्री मनोज गर्ग ने बताया कि किसानों को ACE ट्रैक्टर के लिये सभी प्रमुख व्यावसायिक बैंक एवं निजी क्षेत्र के वित्तीय संस्थान सुगमता से ऋण उपलब्ध करा रहे हैं। कंपनी ने कई वित्तीय संस्थाओं के साथ ट्रैक्टर ऋण के लिए एमओयू साइन किया है।

## राष्ट्रीय प्रवक्ता संजय रघुवंशी सम्मानित



एग्रो इनपुट डीलर एसोसिएशन के राष्ट्रीय प्रवक्ता संजय रघुवंशी को विगत दिनों FMC ने उज्जैन में आयोजित कंपनी की डीलर मीटिंग में एग्रो इनपुट डीलर व्यापारियों के लिए किये जा रहे कार्यों के लिए सम्मानित किया।

## जैविक खेती से सुधारे मृदा स्वास्थ्य : श्री कुशवाह

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालियर द्वारा मुरार विकासखण्ड के चार ग्राम खेड़ा, इकहरा, सिरसौद एवं भुवनपुरा में विकसित कृषि संकल्प अभियान अंतर्गत बृहद कृषक संगोष्ठी शिविरों का आयोजन किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, ग्वालियर के संयुक्त तत्वाधान में किया गया जिनमें लगभग 1000 कृषकों एवं कृषक महिलाओं ने सहभागिता की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में ग्वालियर क्षेत्र से सांसद भारत सिंह कुशवाह, कार्यक्रम की अध्यक्ष दुर्गेश कुंवर जाटव, अध्यक्ष, जिला पंचायत, ग्वालियर द्वारा भाग लिया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालियर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. शैलेन्द्र सिंह कुशवाह द्वारा अतिथियों को विकसित कृषि संकल्प अभियान के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी तथा बताया कि मुरार विकासखण्ड में लगभग 4500 कृषकों को उन्नत कृषि तकनीकी की जानकारी दी गयी। डॉ. कुशवाह ने विकसित कृषि संकल्प अभियान अंतर्गत तकनीकी सत्र में कृषकों को खरीफ फसलों में समन्वित खरपतवार प्रबंधन की तकनीकों पर विस्तार से प्रकाश भी डाला।

श्री भारत सिंह कुशवाह सांसद, ग्वालियर ने कृषकों से आवाहन किया कि भारत सरकार के इस अनूठे एवं अभिनव अभियान का लाभ लें।



वैज्ञानिक एवं अधिकारी स्वयं चलकर आपके द्वार पर खरीफ फसलों को लगाने से पहले आपको उनकी उन्नत उत्पादन तकनीकी एवं उन्नत किस्मों के बीजों की जानकारी देने आपके बीच में आ रहे हैं। इस अवसर पर कृषि विभागीय अधिकारी, कर्मचारियों द्वारा कृषि से संबंधित विभिन्न योजनाओं की जानकारी भी दी जा रही है। कृषक समुदाय को इस पहल का भरपूर लाभ लेना चाहिए।

सांसद श्री कुशवाह ने कृषकों से जैविक खेती अपनाकर मृदा को स्वास्थ्य बनाने का आवाहन किया। आपने कृषकों से जल संरक्षण करने हेतु आवाहन किया कि कृषि में जल संरक्षण के लिए उन्नत सिंचाई प्रणालियों जैसे ड्रिप और स्प्रींकलर, फसल चक्र, संरक्षण जुताई और वर्षा जल संचयन जैसी तकनीकों को अपनाना महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम में मुरार विकासखण्ड से वैज्ञानिक दल के प्रभारी डॉ. रीता मिश्रा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (गृह विज्ञान), डॉ. राजीव सिंह चौहान, वैज्ञानिक (कृषि प्रसार) तथा डॉ. एस.सी. श्रीवास्तव अन्य मैदानी कृषि, आत्मा एवं उद्यानिकी विस्तार अधिकारियों के साथ उपस्थित थे।

# कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्राण कर्मचारी

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हवीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास,  
होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824  
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675  
E-mail: krishak\_doot@yahoo.co.in Website: www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....

संस्था का नाम.....

पूरा पता.....

ग्राम..... पोस्ट..... तहसील.....

जिला..... राज्य..... पिन कोड.....

दूरभाष/कावां. .... घर ..... मोबा. : .....

### सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूप (अंकों में)..... (शब्दों में).....

बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....

दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम..... हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक..... एवं हस्ताक्षर..... एवं संस्था सील



की शील्ड

रोगों से रक्षा, फसलों की सुरक्षा!



50 Years of Cultivating Prosperity

कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड

कार्यालय: 1115, हेमकुन्ट (मोदी) टावर, 98, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली- 110019  
टोल फ्री नंबर: 1800-572-5065 | वेबसाइट: www.krepl.in



कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड

## अन्नदाता का साथ किसान का विकास



### अन्नदाता

जिंकेटेड एन.पी.के. (20:20:00:13)

सल्फर और जिंक की ताकत  
ज्यादा उपज और कम लागत

### अन्नदाता जिबो

अन्नदाता जिबो का वादा  
मिठी जानदार और उपज भी ज्यादा



- जिंक 0.5%
- सल्फर 20%
- कार्बोनाइट 20%
- सल्फर 13%



- कार्बोनाइट 16%
- बोरॉन 0.2%
- जिंक 0.5%
- सल्फर 11%
- कैल्शियम 19%

## ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज

रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-0-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)

उत्पादक: ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा)। कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मेघनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (रजौवा एवं बण्डा - सागर)

जोश का  
राज  
मेरा  
SWARAJ

# नया स्वराज 855 FE बना

## इंडियन ट्रैक्टर ऑफ दि इयर

